



वेद
सहज शिक्षणम् .

वेद इंस्टीट्यूट

For Civil Services

Passion, Process, Performance

इतिहास

प्राचीन भारत

यूनिट-1



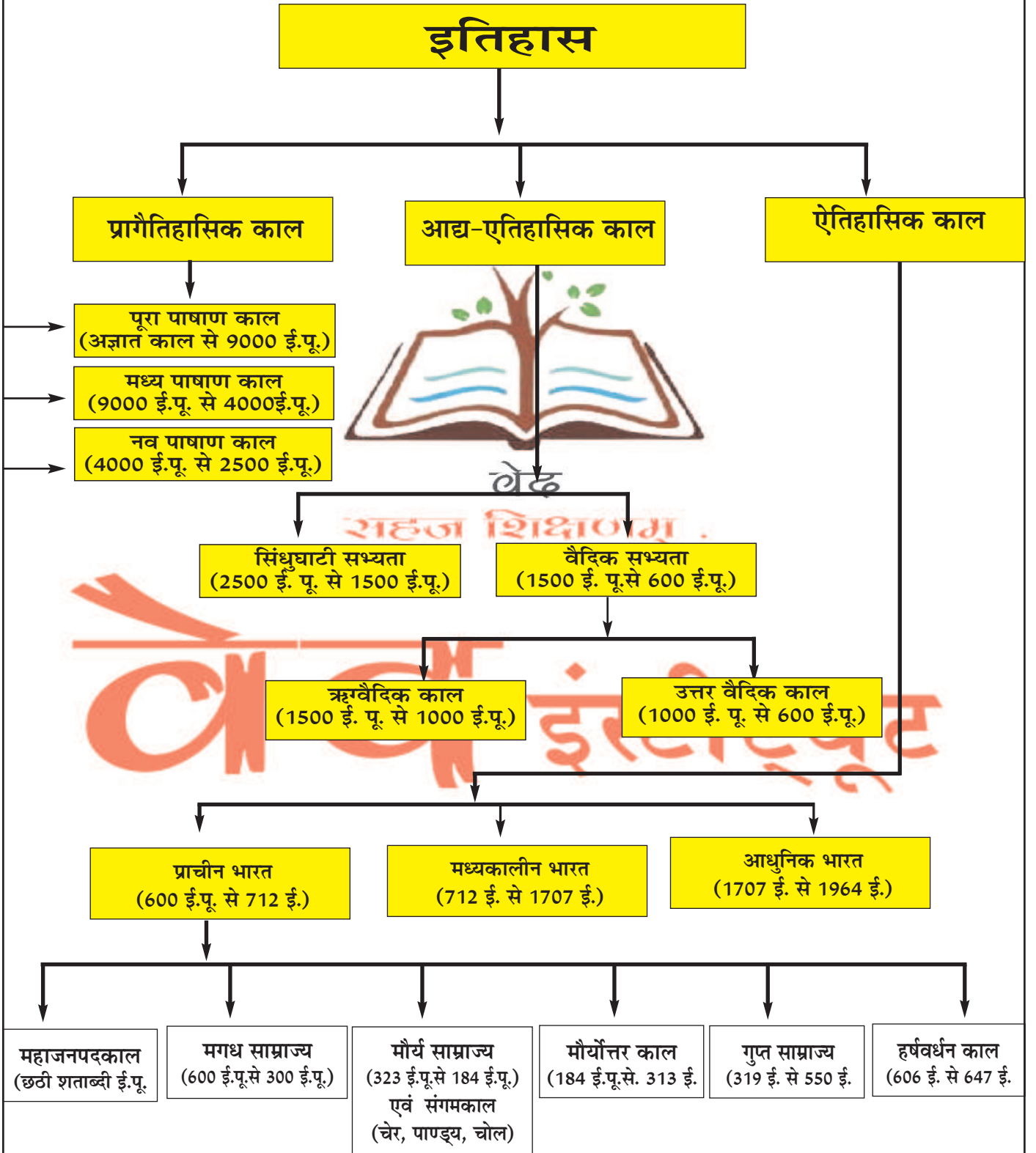
वेद इंस्टीट्यूट

Address : Near Gurjar Hospital, Back of Chai Sutta Bar Vishnupuri Bhawarkua Square, Indore

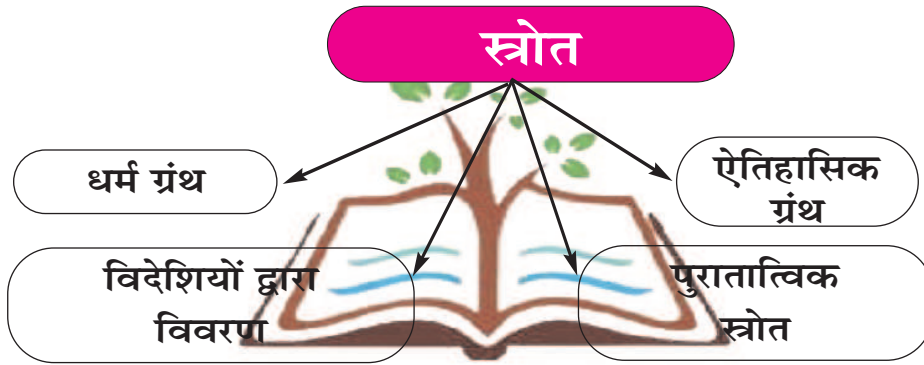
Contact - 7987037593, 7389750989 Mail ID: instituteved@gmail.com

प्राचीन भारत का इतिहास

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	प्राचीन भारत के स्रोत	01 - 04
02	प्रागैतिहासिक काल	05-06
03	सिन्धु घाटी सभ्यता	07-10
04	वैदिक काल	11-17
05	प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन	18-22
06	महाजनपद काल	23-24
07	मगध साम्राज्य	25-26
08	मौर्य काल	27-34
09	मौर्योत्तर काल	35-36
10	मौर्योत्तर कालीन विदेशी शासक	37-38
11	गुप्तकाल	39-44
12	गुप्तोत्तर काल	45-46
13	दक्कन एवं दक्षिणभारतका इतिहास	47-50



भारतीय समाज एवं संस्कृति आज जिस स्थिति में है, उनके संदर्भ में भारत के अतीत का अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि वर्तमान भारत की जड़ें अतीत से जुड़ी हुई हैं। अतीत में हुआ विकास ही क्रमिक रूप से चलता हुआ आज के युग तक आ पहुँचा है। ऐसी स्थिति में अपने अतीत को ठीक से समझना आवश्यक है। इतिहास जानने के लिए स्रोतों के इतिहास के अध्ययन से हम यह पता लगा सकेंगे कि वर्तमान स्थिति की जड़ें कहाँ हैं? इससे हम यह भी जान सकेंगे कि भारतीय समाज एवं संस्कृतियों का विकास कब, कहाँ और कैसे हुआ था?



धार्मिक ग्रंथ स्रोत

ब्राह्मण साहित्य : ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, महाभारत, रामायण, पुराण।

साहित्य: विनयपिटक, सुतपिटक, अभिधम्मपिटक, महावंश, दीपवंश, ललित विस्तार, दिव्यावदान, बुद्धचरित्र (अश्वघोष), महाविभाष (वसुमित्र), जातक आदि।

जैन धर्म : कल्पसूत्र, भगवती सूत्र, आचारांग सूत्र आदि।

राजतरंगिणी : संस्कृत भाषा, पहली बार ऐतिहासिक की झलक इसी ग्रंथ में मिलती है।

- **बौद्धग्रंथ :** महावंश व दीपवंश।
- **ललित विस्तार (बौद्ध ग्रंथ)** की रचना नेपाल में हुई थी।
- **अष्टाध्यायी:** पाणिनी द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण।
- **महाभाष्य :** पतंजलि द्वारा रचित।
- **हर्षचरित :** हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित।
- **अर्थशास्त्र :** जो कौटिल्य (चाणक्य/विष्णुगुप्त) ने लिखी, मौर्यकालीन राजव्यवस्था का चित्रण करती है।

❑ विदेशियों द्वारा विवरण

यूनानी लेखक

- ❖ **हेरोडोटस:** इतिहास का पिता, पुस्तक **हिस्टोरिका** नामक की रचना की।
- ❖ **मेगास्थनीज:** सैल्यूकस के राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा तथा **इण्डिका** की रचना की।
- ❖ **अज्ञात लेखक:** यूनानी लेखक, रचना-**पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी** (लाल सागर का विवरण) में दिया है।
- ❖ **टोलेमी:** ज्योग्राफी (150 ई. के आस-पास प्राचीन भारतीय भूगोल एवं वाणिज्य की जानकारी देती है।
- ❖ **स्ट्रैबो:** मेगास्थनीज के विवरण को काल्पनिक माना है।

ऐतिहासिक साहित्य स्रोत :

राजतरंगिणी - (कल्हण), पृथ्वीराज रासो (चन्द्रबरदाई), हर्षचरित (बाण भट्ट), मुद्राराक्षस (विशाखादत्त), अर्थशास्त्र (कौटिल्य), अभिज्ञानशाकुन्तलम (कालिदास), स्वप्नवासवदत्ता (भास)

राजाओं द्वारा रचित साहित्य

हाल (सातवाहन) : गाथा सप्तशती
महेन्द्रवर्मन (पल्लव) : मतविलास प्रहसन
हर्षवर्धन : रत्नावली, नागानन्द, प्रियदर्शिका
सोमेश्वर (चालुक्य) : मान्सोल्लास

यूनानी लेखक

- ❖ **प्लिनी: नेचुरलिस हिस्टोरिका** भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापारिक संबंधों की जानकारी देती है।

चीनी विवरण

- ❖ **फाह्यान** : भारत में बौद्ध धर्म के अध्ययन के प्रारंभ में। उसने फू-को-की की रचना की जिसमें गुप्त काल में भारत आया।
- ❖ **ह्वेनसांग (युवान च्वांग)** : यह हर्षवर्धन के समय 629 ई. में भारत आया और सी-यू-की की। रचना की वाटर्स के अनुसार वह भारत को इन-टू (अर्द्धचन्द्रकार) नाम देता है। ह्वेनसांग के मित्र व्ही-ली ने ह्वेनसांग की जीवनी लिखी थी। इसने हर्षकालीन राजनीति के साथ-साथ धर्म, रीति-रिवाज एवं समाज का वर्णन किया है। इसमें 138 देशों का विवरण मिलता है।
- ❖ **इत्सिंग** : यह सातवीं शताब्दी में भारत आया तथा मालदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का वर्णन किया।

अरबी लेखक

- ❖ **सुलेमान** : वह 9वीं शताब्दी में भारत आया तथा पाल एवं प्रतिहार शासकों के बारे में लिखा।
- ❖ **अलबरूनी** : (महमूद गजनवी) का समकालीन) ने तहकीक-ए-हिन्द (किताब-उल-हिन्द) की रचना की, जिसमें भारत के निवासियों की दशा का वर्णन किया है।
- ❖ **सिक्के**: भारत के प्राचीन सिक्के पंचमार्क (Punchmark) या आहत सिक्के कहलाते थे। साहित्य में इन सिक्कों को कार्षापण कहा गया है।

सिक्के	
वंश शासक	विशेष
कुषाण वंश	सोने के सिक्के
समुद्रगुप्त (गुप्त वंश)	वीणा बजाते हुए।
सातवाहन वंश	शीशे के सिक्के
गुप्तकाल	स्वर्ण सिक्के (दीनार) चाँदी सिक्के (रूपक)

शब्दावली

- ❖ **अभिलेख** : जो लेख मुहर, प्रस्तरस्तंभों, स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं। उन्हें अभिलेख कहते हैं।
- ❖ **एपिग्राफी** : अभिलेख के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी) कहते हैं।

- ❖ **पेलिऑग्राफी** : अभिलेख के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र (पेलिऑग्राफी) कहते हैं।
- ❖ **न्यूमिस्मेटिक्स** : सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहते हैं।

अभिलेख

- ❖ सबसे अधिक अभिलेख मैसूर संग्रहालय में संग्रहीत है।
- ❖ मौर्य, मौर्योत्तर और गुप्त काल के अधिकांश अभिलेख कार्पस इन्सक्रिप्शनम इंडिकेरम नामक ग्रंथ में संकलित हैं।

अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियाँ

- ❖ **प्राकृत लिपि** : आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं।
- ❖ **ब्राह्मी लिपि** : अशोक के शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं। जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
- ❖ **खरोष्ठी लिपि** : अशोक के कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि में हैं जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
- ❖ **यूनानी एवं आरामाइक लिपि** : पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेखों में इन लिपियों का प्रयोग हुआ है।

चौदहवीं सदी में फिरोजशाह तुगलक को अशोक के दो शिलालेख मेरठ (उ.प्र.) एवं टोपरा (हरियाणा) में मिले, जिन्हें दिल्ली लाया गया। 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने इन शिलालेखों की ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम पढ़ा।

महत्वपूर्ण अभिलेख एवं उनके शासक	
शासक	अभिलेख
❖ समुद्रगुप्त (गुप्त वंश)	प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद), एरण, अभिलेख (सागर) मध्यप्रदेश)
❖ रुद्रदाम्न (शक)	जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात)
❖ स्कंदगुप्त (गुप्तवंश)	भितरी स्तंभ लेख (गाजीपुर)
❖ खारवेल (कलिंग)	हाथीगुफा अभिलेख
❖ पुलकेशियन-द्वितीय (चालुक्य)	एहोल अभिलेख
❖ राजा भोज (प्रतिहार)	ग्वालियर प्रशस्ति (मध्यप्रदेश)
❖ विजयसेन	देवपाड़ा अभिलेख
❖ हर्षवर्धन (वर्धन वंश)	मधुवन एवं बासखेड़ा अभिलेख)
❖ यशोधर्मन (मालवा नरेश)	मंदसौर प्रशस्ति
❖ गौतमीबलश्री (सातवाहन)	नासिक अभिलेख

अभिलेख : विशिष्ट तथ्य

- ❖ जूनागढ़ अभिलेख : रुद्रदमन का संस्कृत भाषा में जारी प्रथम अभिलेख माना जाता है।
- ❖ ऐहोल अभिलेख : कवि रविकीर्ति द्वारा रचित पुलकेशन-द्वितीय का दरबारी।
- ❖ प्रयाग स्तम्भ : अशोक द्वारा रचित, कारुवाकी एवं तीवर का उल्लेख मिलता है।
- ❖ प्रयाग प्रशस्ति : हरिषेण द्वारा रचित, समुद्रगुप्त का संधि-विग्रहक।
- ❖ भानुगुप्त के एरण अभिलेख में सर्वप्रथम सती प्रथा (गोपराज नामक सैनिक की पत्नी) का लिखित साक्ष्य प्राप्त

होता है।

- ❖ चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहा लेख के अनुसार उसका उद्देश्य संपूर्ण पृथ्वी को जीतना था।
- ❖ तुमुन अभिलेख में कुमारगुप्त-प्रथम को शरदकालीन सूर्य की तरह बताया गया है।
- ❖ स्कन्दगुप्त के भीतरी अभिलेख में हूणों के आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- ❖ मंदसौर अभिलेख में यशोधर्मन को जननेंद्र कहा गया है।
- ❖ चन्द्रगुप्त-द्वितीय के विजयों का वर्णन मेहरौली लौहस्तंभ लेख में मिलता है।

विदेशी अभिलेख

- ❖ बिगाज-कोई (एशिया माइनर, मध्य एशिया) से 1400 ई. पू. में प्राप्त संधि पत्र अभिलेख में वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नाशत्य के नाम उल्लिखित हैं।
- ❖ हेलियोडोरस (यूनानी राजदूत) का बेसनगर (विदिशा) का गरुड़ स्तंभ लेख, भागवत धर्म (वासुदेव की आराधना) की जानकारी देता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक-

- ❖ 1776 में मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद कोड ऑफ जेन्टल लॉज के नाम से कराया गया।
- ❖ सर विलियम जोन्स (एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के संस्थापक) ने 1789 में अभिज्ञानशाकुंतलम् का अंग्रेजी अनुवाद किया।
- ❖ विल्किन्स ने 1785 में भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- ❖ विन्सेंट आर्थर स्मिथ की पुस्तक अर्ली हिस्ट्री ऑफ

इंडिया में प्राचीन भारत का सुव्यवस्थित इतिहास प्रस्तुत किया गया है।

- ❖ ब्रिटिश इतिहासकार ए.बैशम ने वंडर दैट वाज इंडिया लिखी।

डी.डी.कौसंबी की कृति एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री प्राचीन भारतीय इतिहास जानने का एक उत्तम स्रोत है।

महत्वपूर्ण रचनाएं व लेखक

लेखक	रचना
विज्ञानेश्वर	मिताक्षरा
जीमूतवाहन	दायभाग
कालीदास	अभिज्ञानशाकुंतलम् माल्विकाग्निमित्रम् रघुवंश
विशाखादत्त	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्

□ नोट:

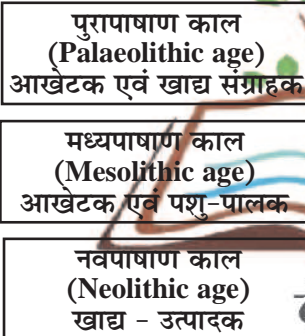
प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसके लिए कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है। इस काल के इतिहास की जानकारी मुख्यतः पुरातात्विक स्रोतों से प्राप्त होती है। मनुष्य के विकास के आधार पर मानव सभ्यता को दो भागों में विभक्त किया जाता है।

पाषाण युग एवं धातु युग।

इतिहासकारों के अनुसार इस सभ्यता का उद्भव एवं विकास प्रतिनूतन (Pleistocene) काल में हुआ।

- इस युग को तीन कालों में विभाजित किया जाता है।

प्रस्थर युग



- **पुरापाषाण युग** : इसे तीन उप भाग में विभाजित किया गया है।

(अ) निम्न पुरापाषाण काल (500,000 ई. पू. से 50,000 ई.पू.)

- इस काल में मानव जीवन अस्थिर था। इसी काल में शिकार कर अपना भोजन संग्रह करता था।
- **मुख्य औजार** : कुल्हाड़ी या हस्त कुठार (Hand-axe) विदारणी (Clever) और खंडक (Chopper)

प्रमुख स्थल

कश्मीर, थार (राजस्थान), बेलनघाटी (मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश), भीमबेटक की गुफाएं (मध्यप्रदेश), सोहन नदी घाटी (पंजाब, पाकिस्तान)

(ब) मध्य पुरापाषाण काल (50,000 ई. पू. से 40,000 ई.पू.)

- अग्नि का प्रयोग
- पत्थर के गोले (बटिकाशम उद्योग) से वस्तुओं का निर्माण हुआ।
- **मुख्य औजार** : फलक, वेधनी, छेदनी एवं खुरचनी।

प्रमुख स्थल

मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश), नेवासा (महाराष्ट्र), उडीसा आदि।

(स) उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ई. पू. से 10,000 ई.पू.)

1. नए चकमक उद्योग
 2. आधुनिक मानव (Homo Sapiens) का उदय।
- सबसे पुरानी चित्रकारी के प्रमाण (भीमबेटका) इसी काल के हैं।

प्रमुख स्थल

भोजपुर, इनामगांव (महाराष्ट्र), बेलनघाटी (उत्तर प्रदेश)

- मध्यपाषाण काल : (9000 ई.पू. से 4000 ई.पू.)
- आदमगढ़ (मध्यप्रदेश) एवं बागोर (राजस्थान) में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इस काल में सूक्ष्म पाषाण (Microliths) फलक का उद्योग था।

- **मुख्य औजार** : पत्थर के बहुत छोटे औजार।

प्रमुख स्थल

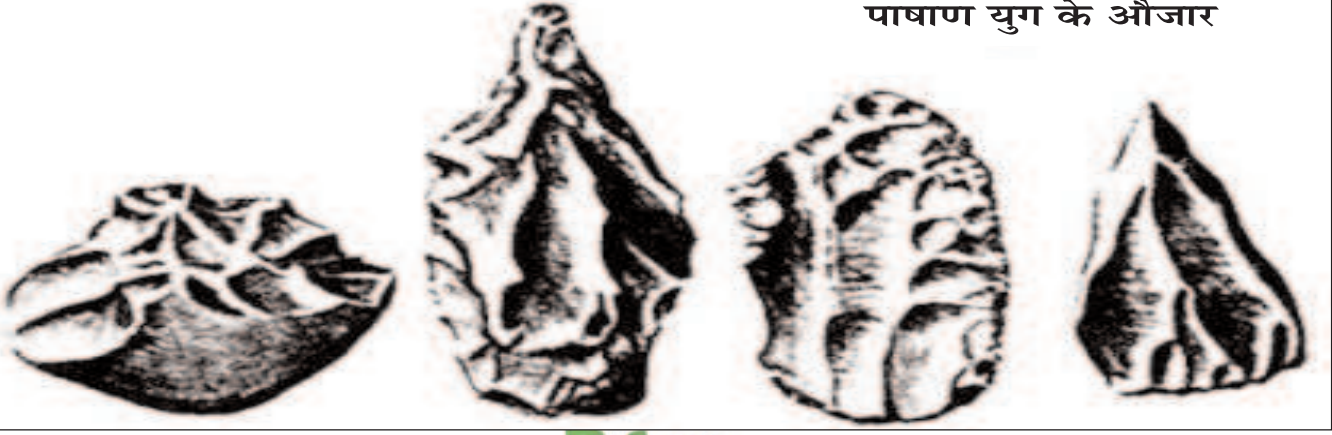
मध्यप्रदेश : (आदमगढ़, होशंगाबाद), भीमबेटका (भोपाल), बोधोर (सिद्धि के पास) राजस्थान बागोर, गुजरात: लंघनाज उत्तर प्रदेश: (महागढ़, मेजा), सराय नाहरराय (प्रतापगढ़) बिहार: (पायसरा (मुंगेर) आदि।

- नवपाषाण काल : (9000 ई.पू. (विश्व) से 7000 ई.पू.) (भारत) से 2500 ई.पू.
- इस काल में मानव ने खेती करना प्रारंभ किया।
- **मुख्य औजार** : पॉलिशदार पत्थर के औजार, मुख्यतः पत्थर की कुल्हाड़ियाँ, हड्डियों के औजार।

प्रमुख स्थल

मेहरगढ़ (पाकिस्तान), बुरजहोम, गुफकराल (कश्मीर), कोल्डीहवा, महागढ़ (उत्तर प्रदेश), चिरांद, सेनुआर बिहार, सरुतारू, मारकडोला (असम), ब्रह्मगिरी, कोडेकाल, हल्लुर, मस्की, पिकलीहल, संगेनकल्लु (कर्नाटक), पाय्यमपाली (तमिलनाडु)

पाषाण युग के औजार



नवपाषाण काल वशिष्ट तथ्य

स्थान	साक्ष्य
मेहरगढ़ (बलूचिस्तान), पाकिस्तान	गेहूँ व जौ की खेती, भेड़ एवं बकरी पालन प्रारंभ के साक्ष्य।
कोलडिहवा (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश)	विश्व में चावल उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य।
बुर्जहोम : (भुर्ज वृक्ष का स्थान), कश्मीर	कब्र में मालिकों के शवों के साथ उनके पालतू कुत्तों को भी दफनाने के साक्ष्य।
गुफ्कराल (कुम्हार की गुहा), कश्मीर	पशुपालन व कृषि दोनों कार्य।
विराद (सारण, बिहार)	हड्डियों के औजार, सर्वप्रथम इसी काल में कुत्ते को पालतू बनाया गया।
पिकलीहल (कर्नाटक)	निवासी पशुपालक थे। राख के ढेर एवं निवास स्थान के साक्ष्य।



मध्य पाषाण युग के औजार



नव पाषाण कालीन औजार एवं उपकरण

- सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय सभ्यता के विकास का प्राचीनतम काल था। सिंधु घाटी सभ्यता को **हड़प्पा संस्कृति, कांस्य युगीन सभ्यता, प्रथम नगरीय सभ्यता** भी कहा जाता है।
- भारतीय पुरातात्विक विभाग के महा निदेशक **सर जान मार्शल** के निर्देश पर **राय बहादुर दयाराम साहनी** ने 1921 में **हड़प्पा** एवं **राखालदास बनर्जी** ने 1922 में खुदाई करवाई।
- **सैंधव घाटी सभ्यता प्राकऐतिहासिक** (Protohistoric) एवं **कांस्य (Bronze)** युगीन थी।

काल निर्धारण

- रेडियोकार्बन (C^{14}) डेटिंग के अनुसार इस सभ्यता की सर्वमान्य तिथि 2350-1750 ई.पू. मानी गई है।
- अन्य विद्वानों के द्वारा सैंधव सभ्यता का बताया काल है-

विद्वान	निर्धारित तिथि
1. सर मार्टीमरव्हील	2500-1500 ई.पू.
2. वूली	2800 ई.पू.
3. सर जॉन मार्शल	3250-1750 ई.पू.
4. डी.पी. अग्रवाल	2350-1750 ई.पू.
5. अलविन	2150-1750 ई.पू.
6. एन.सी.ई.आर.टी	2500 -1800 ई.पू.

सिंधु सभ्यता का काल

पूर्व हड़प्पा काल
(3500-2600 ई.पू.)

स्थान
कोटदीजी, दबंसादात,
आमरी-नाल, सिसवाल

उत्तर हड़प्पाकाल
(1900-1300 ई.पू.)

स्थान
रंगपुर, रोजदी (गुजरात),
राखीगढ़ी (हरियाणा)

विस्तार :-

- सिंधु सभ्यताका विस्तार भारत एवं पाकिस्तान में लगभग 1500 स्थलों पर पाया गया है।
- यह समूचा क्षेत्र **त्रिभुज के आकार** का है।
- इस सभ्यता का कुल क्षेत्रफल 1,299,600 वर्गकिलोमीटर है।

उत्तर दिशा- मांडा(जम्मू कश्मीर)
(चिनाव नदी)

पश्चिम दिशा-
सुत्कांगेडोर
(ब्लूचिस्तान)
(दाश्क नदी)

1100 किमी.

1600 किमी.

पूर्व दिशा-
आलमगीरपुर
(उत्तर प्रदेश)
(हिंडन नदी)

दक्षिण दिशा- दैमावाद (महाराष्ट्र)
(नर्मदा नदी)

हड़प्पाकालीन प्रमुख स्थल

1. हड़प्पा

- यह पाकिस्तान के मोण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर।
- **खोज** -1921 में दयाराम साहनी ने की।
- हड़प्पा से **स्वस्तिक चिन्ह** प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा में **चह अन्नागार** मिले हैं, जो ईंटों के बने चबूतरे पर दो पांतों में हैं। प्रत्येक की लंबाई 15.23 मी. एवं चौड़ाई 6.09 मी. है। यहां फर्श की दरारों में गेहूं और जौ के दाने मिले हैं।
- हड़प्पा में **दो कमरे वाले बैरक** मिले हैं।
- यहां से प्राप्त मोहरों पर से बसे अधिक अंकन **एक श्रृंगी पशु** का है।

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल

प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	उत्खनन वर्ष	नदी	वर्तमान संबंधित क्षेत्र
हड़प्पा	दयाराम साहनी	1921	रावी	मोंटगोमरी (पंजाब, पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922	सिन्धु	लरकाना-जिला (प्रांत-सिंध पाकिस्तान)
सोतकागेन्दोर	आरेल स्टाइन	1927	दाश्क	ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान)
चान्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार	1931	सिन्धु	सिंधु (पाकिस्तान)
कालीबंगा	बी.के. थापर व बृजवासी लाल	1953	घग्घरप	हनुमानगढ़ (राजस्थान)
कोटदीजी	फजल अहमद	1953	सिन्धु	खैरपुर (सिंध, पाकिस्तान)
रंगपुर	रंगनाथ राव	1953-54	मादर	काठियावाड़ (गुजरात)
रोपड़	यज्ञदत्त शर्मा	1953-56	सतलज	रोपड़ (पंजाब)
लोथल	रंगनाथ राव	1957-58	भोगवा	अहमदाबाद (गुजरात)
आलमगीरपुर	यज्ञदत्त शर्मा	1958	हिन्दन	मेरठ (उत्तर प्रदेश)
बनवाली	आर.एस. बिष्ट	1974	रंगोई	हिसार (हरियाणा)
धौलावीरा	आर.एस. बिष्ट	1985-90		कच्छ (गुजरात)

2. मोहनजोदड़ो (मृतकों का टीला)

- यहां एक मुहरमिली है, जिस पर **पुरुष देवता** अंकित हैं। उसके सिर पर **तीन सींग** हैं।
- वह पद्मासन मुद्रा में बैठा हुआ है। उसके चारों ओर एक **हाथी**, एक **बाघ** और एक **गैंडा** है, आसन के नीचे एक **भैंसा** है और पांवों पर दो **हिरण** हैं। इसे शि का प्राचीन रूप, **पशुपति महादेव** बताया गया है।
- यहां एक **विशाल स्नानागार** मिला है, जो कि **11.88 मी. लंबा, 7.01 मी. चौड़ा तथा 2.43 मी. गहरा** है।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत **अन्नागार** है जो कि **45.71 मी. लंबा एवं 15.23 मी. चौड़ा** है।
- एक अन्य मुहर पर **कूबड़ वाले बैल** की आकृति बनी है।
- यहां से सीप का पैमाना, **काँसे की नर्तकी**, सूती वस्त्र के साक्ष्य, घोड़े के अस्तित्व के संकेत भी मिले हैं।

3. कालीबंगा (काले रंग की चूड़ियां)

- कालीबंगा में **जुते हुए खेत** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। जहाँ दो अलग-अलग फसलें उगाई जाती थीं।
- यहाँ पर **जल निकास प्रणाली** का अभाव मिलता है।
- यहाँ **युगल शवधान** का प्रमाण मिला है।
- यहाँ के मकानों में एक पल्लेवाला दरवाजा लगा है।
- कालीबंगा में अलंकृत ईंटें एवं अग्निकुंड भी प्राप्त हुए हैं।

4. लोथल

- इसे **लघु हड़प्पा** या **लघु मोहनजोदड़ो** भी कहा जाता है।
 - यह हड़प्पाकालीन **बंदरगाह** नगर था।
 - लोथल में **चावल** उपजाने के अवशेष (1800 ई.पू.) पाए गए हैं।
 - यहां से अन्न पीसने की चक्की, **युगल शवधान** के साक्ष्य, फारस की मुहरें, नाव के साक्ष्य, अग्निवेदी के प्रमाण, **हाथी दाँत का पैमाना** आदि भी प्राप्त हुए हैं।
 - लोथल में एक चित्रित मृदभांड मिला है, जो **पंचतंत्र की कहानी चालाक लोमड़ी** की याद दिलाता है।
- नोट:** भारत और पुर्तगाल ने मिलकर लोथल में इस **राष्ट्रीय समुद्री धरोहर संग्रहालय** की स्थापना करने का निर्णय लिया है।

5. चान्हूदड़ो

- चान्हूदड़ों में सैंधव संस्कृति के बाद **झूकर** और **झाँगर संस्कृति** विकसित हुई।
- यहां मटके, गुड़ियाबनाने का कारखाना, लिपिस्टिक, एक ईंट पर बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते के पैरों के निशान
- चान्हूदड़ों में **वक्रकार ईंटें व काँस्य की बैलगाड़ा एवं इक्कागाड़ी** के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

6. रंगपुर

- यह गुजरात के **मादर नदी** के तट पर अवस्थित था।
- यहां पर **धान की भूँसी** का साक्ष्य एवं कच्ची ईंटों का दुर्ग मिला है।

7. धौलावीरा (गुजरात)

- यहाँ से **हड़प्पा संस्कृति के उत्थान और पतन** के साक्ष्य साथ-साथ मिले हैं।
- यह भारत में **सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल** है।

नोट : यूनेस्को की **विश्व धरोहर (40वां)**, 2021की सूची में शामिल।

सिन्धु घाटी सभ्यता - तथ्य

- ♦ **लोहे का ज्ञान नहीं** था।
- ♦ लोग **घोड़े** से परिचित नहीं थे। लेकिन **सरकोटदा** में घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता - तथ्य

सामाजिक जीवन	आर्थिकजीवन	राजनैतिक जीवन	धार्मिक जीवन	व्यापार
<ul style="list-style-type: none"> * समाज मातृसत्तात्मक, * शांतिप्रिय, सर्वाहारी समाज। * मनोरंजन के लिए पासे का खेल, पशुओं की लड़ाई एवं नृत्य। 	<ul style="list-style-type: none"> * मुख्य व्यवसाय पशुपालन, कृषि व उद्योग * कालीबंगा में जुते हुए खेत का साक्ष्य * नौ फसलों का उत्पादन करते थे, जिनमें गेहूँ एवं जौ मुख्य खाद्यान्न * बनवाली में जौ का साक्ष्य। * सबसे पहले कपास उत्पादन करने का श्रेय * नदी, तालाबों द्वारा सिंचाई होती थी। (नहरों के साक्ष्य प्राप्त नहीं हैं।) 	<ul style="list-style-type: none"> * राजनीतिक संगठन का स्पष्ट अभाव है। * पुरोहित द्वारा शासन व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि कहीं पर भी मंदिर के साक्ष्य नहीं। * अस्त्र-शस्त्र का भी अभाव था। * हड़प्पा का शासन संभवतः वर्णिक वर्ग के हाथों में था। 	<ul style="list-style-type: none"> * हड़प्पा में मातृदेवी की मूर्ति के साक्ष्य। * मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति शिव की मुहर प्रसिद्ध है। * मातृदेवी की उपासना लोकप्रिय थी। * एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधे का साक्ष्य (धरती को उर्वरता की देवी) * पूजा: कूबड़वाले बैल व पक्षियों में फाखा * पीपल पूजा, सूर्य पूजा, प्रकृतिकी पूजा प्रचलित थी। 	<ul style="list-style-type: none"> * वस्त्र उद्योग प्रमुख उद्योग था, प्रमुख केन्द्र मोहनजोदड़ो था। सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग होता था। * चान्दूदड़ों व लोथल से गुड़िया व मनका बनाने का साक्ष्य मिला है। * व्यापार वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था। * विदेशी व्यापार-इराक, ईरान, बहरीन, मिस्र से होता था।

सिंधु सभ्यता में आयात की जाने वाली धातुएँ

धातु	स्थल जहाँ से आयात होता था
1. लाजवर्ण मणि	बदख्शाँ (अफगानिस्तान)
2. सोना	कोलार (कर्नाटक)
3. टिन	अफगानिस्तान
4. स्टेटाइट	ईरान
5. गोमेद	सौराष्ट्र (गुजरात)
6. ताँबा	खेतड़ी (राजस्थान)
7. फिरोजा	फारस
8. संगमरमर	राजस्थान
9. इद्रगोप मणि	भड़ौच (गुजरात)

मुहरें तथा बाट

- निर्माण सेलखड़ी (Steatite) से होता था।
- विनिमय बांट : वर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे। बांट, तौल में 16 या उसके आवर्तकों में होते थे (जैसे 16, 64, 160, 320)। ऊपरी मानदंड में दशमलव प्रणाली का प्रयोग होता था।

हड़प्पाई लिपि :

- लिपि मुख्यतः चित्रलेखात्मक है। यह लिपि गोमुत्रिका पद्धति में (Boustrophedon Style) व चित्रात्मक (या भावचित्रात्मक-आइडियोग्राफिक) है।
- अब तक लिपि पढ़ी नहीं जा सकी है।

सैंधव सभ्यता का अंत

- हड़प्पा संस्कृति के अंत के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है, जो निम्नलिखित हैं:-

पतन का कारण	विद्वान
1. भूकंप	डेल्स
2. प्राकृतिक आपदा	केनेडी
3. आर्यों का आक्रमण	व्हीलर व मॉर्डन
4. विदेशी आक्रमण	गॉर्डन चाइल्ड
5. जलवायु परिवर्तन	स्टाइन व घोष
6. अस्थिर नदी तंत्र	लैब्रिक
7. बाढ़	मैके, राव मार्शल



सिंधु घाटी सभ्यता: विशिष्ट तथ्य

- ज्यादातर हड़प्पाई सीलें चौकोर हैं।
- बनावाली (हरियाणा) में मिट्टी के बने हॉल का प्रतिरूप प्राप्त हुआ है।
- रंगपुर में बाजरे की खेती का प्रमाण मिलता है।
- सिन्धु संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी नगर योजना थी, जो ग्रिड पद्धति पर आधारित थी।
- आलमगीरपुर से एक भी मुहर नहीं मिली है।
- सरस्वती जहाँ बहती थी (अब लुप्त) वह क्षेत्र विनशन कहलाता था।
- हड़प्पाकालीन नगरों को आयताकार खण्डों में बांटा गया था।
- सुतकागेंडोर व सुरकोतदा समुद्र तटीय नगर थे।
- सैंधव वासियों के निवास स्थल के अंतर्गत दुर्ग पश्चिम दिशा में व बस्ती पूर्व दिशा में होते थे।
- घरों के दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़क की ओर न खुलकर पीछे की ओर खुलते थे। केवल लोथल में दरवाजे मुख्य सड़क की ओर खुलते थे।
- अलेक्जेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है।
- विदेशी व्यापार : दिलमन की पहचान बहरीन से, माकन की पहचान मकरान तट और मेलुहा की पहचान सिंधु क्षेत्र से की गई।



वैदिक काल की जानकारी वेदों से प्राप्त होती है। **ब्राह्मण साहित्य** में वेद सबसे पुराना है। वेद का शाब्दिक अर्थ है-जनना। **संस्थापक आर्य** थे। आर्य शब्द **संस्कृत भाषा** से लिया गया है।

➤ वैदिक संस्कृति, **ग्रामीण संस्कृति** थी। आर्यों की लिपि की जानकारी न होने के कारण वेद श्रवण परंपरा द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाये जाते थे। इसलिए वेदों को **श्रुति** भी कहा जाता है।

➤ संपूर्ण वैदिक साहित्य को दो भागों में बाँटा जाता है-

(1) **श्रुति साहित्य**

(2) **स्मृति साहित्य**

(1) **स्मृति साहित्य** में वेदों के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद आते हैं। ये लंबे समय तक श्रवण परंपरा के माध्यम से चलते आ रहे बाद में इनका संकलन किया गया।

➤ वेदों का संकलन द्वैपायन व्यास ने किया था। इसलिए वे वेदव्यास कहलाएँ

(2) **स्मृति साहित्य** मनुष्यों द्वारा रचित है। इसमें वेदांग, सूत्र एवं ग्रंथ शामिल हैं। इनकी संख्या चार है-

ऋग्वेद

अथर्ववेद

चार वेद

सामवेद

यजुर्वेद

ऋग्वेद

➤ ऋग्वेद में कुल 10 मण्डल (1) बालखिल्य सहित) एवं 1028 सूक्त हैं। इसमें 10,580 मंत्र हैं। जिसमें 118 दुहराए गए हैं। अतः कुल 10,462 मंत्र हैं।

➤ ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण होतृ या होता द्वारा किया जाता था।

➤ दूसरे से सातवें मण्डल को **प्राचीन मण्डल** या वंश मण्डल कहा जाता है।

➤ कृषि संबंधित जानकारी **चौथे मण्डल** से।

➤ **गायत्री मंत्र** (जिसकी रचना विश्वामित्र ने की थी) का उल्लेख **तीसरे मण्डल** में है।

➤ **सातवें मण्डल वरुण** को समर्पित है एवं **नाँवे मण्डल** के 144 सूक्तों में **सोम** का वर्णन है।

➤ **विदुषी महिलाएं**- लोपमुद्रा, सिक्ता, अपाला, घोषा

आदि ने कुछ ऋचाओं की रचना की। ऋग्वेद में इन महिलाओं को **ब्रह्मीवादिनी** कहा गया है।

➤ **दसवें मण्डल** (जो सबसे बाद का है) के **पुरुषसूक्त** में **चारों वर्ण** - पुरोहित, राजन्य, वैश्य एवं कौषीतकी, ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ हैं।

➤ **ऐतरेय ब्राह्मण** में जनपद एवं **राजसूय यज्ञ** का उल्लेख मिलता है।

➤ **ऋग्वेद** में **यमुना** का उल्लेख तीन बार एवं **गंगा** का उल्लेख एक बार हुआ है।

➤ इस वेद में **सोमरस** का वर्णन सर्वाधिक बार हुआ है तथा **इन्द्र** को **पुरंदर** (किला तोड़ने वाला) कहा गया है।

➤ **आयुर्वेद**, ऋग्वेद का उपवेद है।

➤ ऋग्वेद में पुरुष देवताओं की प्रधानता है। **इन्द्र** का वर्णन सबसे अधिक 250 बार किया गया है एवं **अग्नि** का 200 बार किया गया है।

सामवेद

➤ सामवेद गायी जाने वाली ऋचाओं का संकलन है, जिनके पुरोहित **उद्गाता** कहलाते हैं।

➤ सामवेद से ही सर्वप्रथम सात स्वरों की जानकारी प्राप्त होती है। इसलिए इसे **भारतीय संगीत का जनक** माना जाता है।

➤ **गंधर्ववेद** सामवेद का उपवेद है।

➤ सामवेद में कुल मंत्रों की संख्या 1549 है। इनमें से 75 मंत्रों के अतिरिक्त, शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं।

यजुर्वेद

➤ यजुर्वेद में अनुष्ठानों, कर्मकाण्डों तथा यज्ञ संबंधी मंत्रों का संकलन है। इनके पुरोहित को **अध्वर्यु** कहते हैं।

➤ यह गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है एवं इसके दो उपभाग हैं।

वेद	पुरोहित	उपवेद	ब्राह्मण	उपनिषद
ऋग्वेद	होतृ	आयुर्वेद	ऐतरेय, कौषीतेक	ऐतरेय, कौषीतकी
सामवेद	उद्गाता	गन्धर्ववेद	जैमिनीय, तांड्य	छान्दोग्योपनिषद, जैमिनीय
				उपनिषद
यजुर्वेद	अध्वर्यु	धनर्वेद		शतपथ, तैत्तिरीय
अथर्ववेद	ब्रह्मा	अथर्ववेद		गोपथ

आरण्यक

- ऋषियों द्वारा जंगलों में की जाने वाली रचनाओं को आरण्यक कहते हैं।
- ये दर्शनिक रहस्यों से परिपूर्ण हैं, संख्या सात हैं।
- इनके नाम ब्राह्मण ग्रंथ से जुड़े हैं जैसे- ऐतरेय, वृहदारण्यक, कौषीतुकी, शतपथ।
- अथर्ववेद का अपना कोई आरण्यक ग्रंथ नहीं है।
(1) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य) (2) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ तैत्तिरीय शतपथ ब्राह्मण है।
- यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि एवं सिंचाई का उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेद

- चौथा एवं अंतिम वेद है, रचना अथर्वा ऋषि ने की थी।
- अथर्ववेद के मंत्र रोग नाशक, जादू-टोना, विवाह, गीत आदि से संबंधित है।
- इसका उपवेद अथर्ववेद है।
- इसका कोई आरण्यक ग्रंथ नहीं है। अथर्ववेद में ही गौत्र शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम बार मिलता है।
- पुरोहित का ब्रह्मा या ब्रह्मा कहते थे।
- इसी वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- चाँदी एवं गन्ने का सर्वप्रथम उल्लेख।

उपनिषद

- उपनिषद वेदों का अंतिम भाग है, इसलिए इन्हें वेदान्त भी कहते हैं।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 है जिनमें से 11 महत्वपूर्ण हैं।
- मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते शब्द लिया गया है।
- इषोपनिषद में गीता का निष्काम कर्म का पहला विवरण मिलता है।
- नचिकेता यम का संवाद कठोपनिषद में है।
- वृहदारण्यक उपनिषद में अहम-ब्रह्मास्मि उल्लिखित है।
- वृहदारण्यक उपनिषद में ही पुनर्जन्म का सिद्धांत एवं याज्ञवल्क्य-गीर्गी संवाद का वर्णन है।
- स्वतास्वतर उपनिषद में सर्वप्रथम भक्ति शब्द का उल्लेख मिलता है।

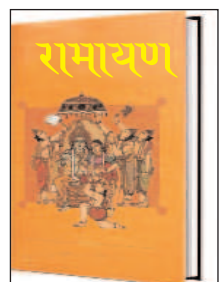
वेदांग

- वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझने के लिए वेदांगों अर्थात् वेद के अंगभूत शास्त्रों की रचना की गई।
- ये वेदांग हैं- शिक्षा (उच्चारण विधि), कल्प (कर्मकांड) व्याकरण, निरुक्त (भाषा विज्ञान) छन्द और ज्योतिष।



वेद स्मृति ग्रंथ

- मनुस्मृति : (ई. पू. 200)- यह सबसे प्राचीन स्मृति ग्रंथ है।
- याज्ञवल्क्य स्मृति (ई.पू. 100)- इसके भाष्यकार हैं अपरार्क एवं विश्वरूप।
- महाभारत- यह व्यास की कृति है, जिसमें कुल 18 पर्व हैं। प्रारंभ में इसमें केवल 8800 श्लोक थे और इसका नाम जय संहिता था। बाद में यह बढ़कर 24,000 श्लोक का हो गया और भारत नाम से प्रसिद्ध हुआ। अंततः इसमें 100,000 (एक लाख) श्लोक हो गए और यह शतसास्त्री या महाभारत कहलाने लगा।
- रामायण - इसकी रचना वाल्मीकि ने की थी। मूलतः इसमें 6000 श्लोक थे। जो बढ़कर 12,000 श्लोक हो गए और अंततः 24,000 श्लोक हो गए।



पुराण

- पुराणों की संख्या 18 है। संकलन गुप्तकाल में हुआ तथा इनमें ऐतिहासिक वंशावलियाँ मिलती हैं। मत्स्य, वायु, शिव, ब्रह्मांड, भागवत कुछ महत्वपूर्ण पुराण हैं।
- विष्णु के दस अवतारों का विवरण, मत्स्य पुराण से प्राप्त होता है। यह सबसे प्राचीन पुराण है।

➤ सूत्र : 4 प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैं-

1. गृहसूत्र: इसमें जातकर्म, नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध और घरेलू या पारिवारिक, अनुष्ठानों का विधि विधान दिया गया है।
2. श्रौतसूत्र: इसमें राजा के द्वारा अनुष्ठेय सार्वजनिक यज्ञों के विधि-पूजन दिए गए हैं।
3. धर्मसूत्र : इसमें धर्म संधी विभिन्न क्रियाओं का वर्णन है।
4. शुल्वसूत्र : इसमें यज्ञवेदी के निर्माण के लिए विविध प्रकार के मापों का विधान है।

ज्यामिति एवं गणित का अध्ययन यहीं से आरंभ होता है।

वेद विशिष्ट तथ्य

- मत्स्य पुराण में सातवाहन, विष्णु पुराण में मौर्य वंश एवं वायु पुराण में गुप्त वंश का वर्णन है।
- वेदत्रयी- इसमें ऋग्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद शामिल हैं।

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- ऋग्वेद के नदी सूक्त (10वाँ मण्डल) में 21 नदियों का वर्णन है

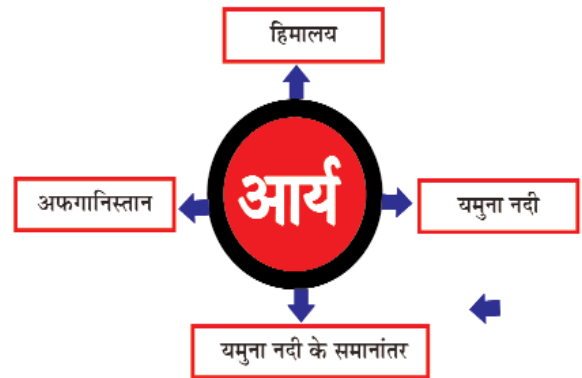
ऋग्वैदिक नदियां

सिन्धु	सिन्धु (हिरण्यानी)
अस्कनी	चिनाब
शतुद्री	शतलज
विपाशा	व्यास
वितस्ता	झेलम
सरस्वतीदष्टिपती	घग्घर

- सिन्धु- आर्यों की सबसे प्रमुख नदी है। उल्लेख सर्वाधिक बार किया गया है।
- ऋग्वेद में उल्लिखित दूसरी नदी सरस्वती है जिसे नदीतमा अर्थात सर्वश्रेष्ठ नदी कहा गया है।
- सप्त सिन्धु प्रदेश- आर्य सर्वप्रथम इसी क्षेत्र से आकर बसे। इसमें सरस्वती, सिन्धु एवं उसकी पाँच सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं।
- मध्यप्रदेश- हिमालय और विन्ध्यचल के बीच का प्रदेश।
- ब्रह्मरक्षि देश -गंगा-यमुना दोआब एवं उसके नजदीकी क्षेत्र।

आर्यों का आगमन एवं विस्तार :

- आर्यों के आगमन के संदर्भ में मैक्समूलर का मत सर्वमान्य है। इनके अनुसार आर्यों का मूल स्थान मध्य एशिया था। इसकी पुष्टि जीवविज्ञानियों ने भी की है। M-17 नामक आनुवांशिक संकेत मध्य एशिया के 40 प्रतिशत से अधिक लोगों में पाया जाता है,
- मूल निवास - मैक्समूलर, रीड- मध्य एशिया



भारत में आर्यों का आगमन



अफगानिस्तान की नदियां

नदी	स्थान
कुभा	काबुल
सुवास्तु	स्वति

- गंडक को सदानीरा के नाम से जाना जाता है।
- शतपथ ब्राह्मण में नर्मदा नदी का वर्णन है। जिसे रेवेतरा नदी कहा गया है।
- ऋग्वेद में समुद्र का तात्पर्य एक बड़े जलराशि के जमाव से है न कि आधुनिक सागर से।
- ऋग्वेद में मरुस्थल के लिए धन्व शब्द का प्रयोग किया गया है।

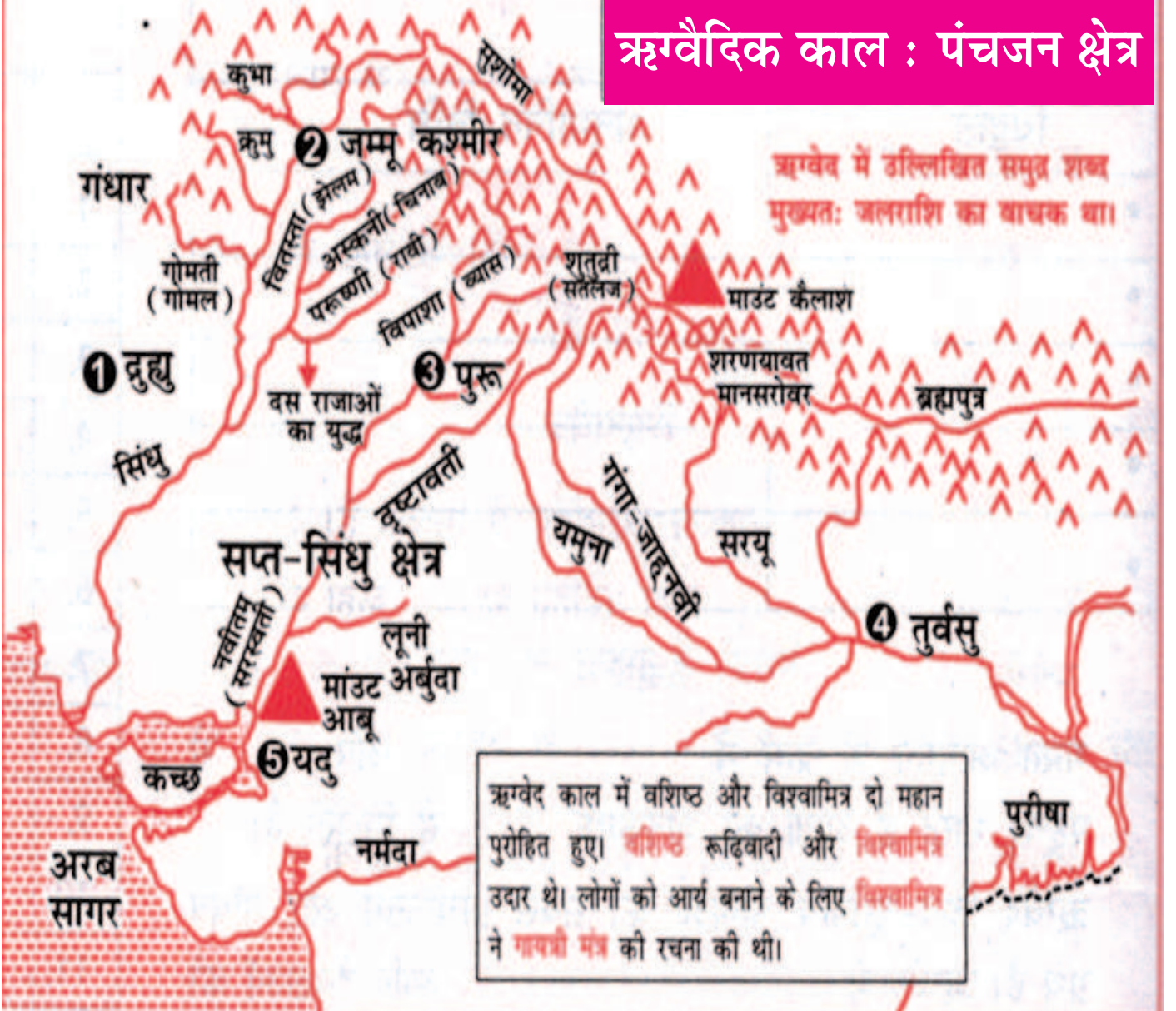
जनजातीय संघर्ष -

- ऋग्वैदिक आर्यों का संघर्ष स्थानीय जनो जैसे दास, दस्यु आदि से हुआ।
- ऋग्वेद के अनुसार भरतवंश के राजा दिवोदास ने शंबर को हराया। (यहां दास शब्द विवोदास के नाम से लगता है।)
- ऋग्वेद में वर्णित दस्यु इस देश के मूल निवासी थे, और आर्यों के जिस राजा ने उन्हें पराजित किया वह त्रसदस्यु कहलाया। यह राजा दासों के प्रति उदार था परंतु दस्युओं का शत्रु था।
- ऋग्वेद में दस्युहत्या का उल्लेख बार-बार मिलता है परन्तु दासहत्या का नहीं।

- परंपराानुसार आर्यों के पाँच कबीले जन थे जिन्हें पंचजन कहा जाता था।
- भरत और त्रित्सु आर्यों के शासक वंश थे।
- भरतवंश और दस राजाओं के बीच परुष्णी नदी के तट पर दर्शतंज युद्ध हुआ (इस युद्ध का वर्णन ऋग्वेद के सातवें मण्डल में है। इस युद्ध में आर्यों के राजा सुदास थे एवं अनार्यों के राजा भेद थे।
- पराजित जनो में पुरुजन सबसे महान थे। बाद में भरतो एवं पुरुओं में मित्रता के फलस्वरूप कुरु वंश की स्थापना हुई।

ऋग्वैदिक काल : पंचजन क्षेत्र

ऋग्वेद में उल्लिखित समुद्र शब्द मुख्यतः जलराशि का वाचक था।



वैदिककाल

ऋग्वैदिक काल

उत्तर वैदिककाल

सामाजिक जीवन

- स्त्रियां सभा-समितियों, शिक्षा में भाग ले सकती थीं
- वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित
- पर्वा प्रथा एवं सती प्रथा नहीं थी
- समाज पितृ सत्तात्मक, छोटी इकाई कुल (प्रधान कुलप)
- अमाज- आजीवन अविवाहित रहने वाली स्त्री
- वस्त्र: - 1. वास- मध्य भाग में पहना जाने वाला वस्त्र
2. अधिवास- चादव या ओढ़नी की तरह वस्त्र
3. नीवी - कमर के नीचे वाला वस्त्र

- उत्तर वैदिक काल का समाज चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)
- वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म से बदलकर जन्म हो गया।
- चार आश्रम- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास- का सर्वप्रथम उल्लेख जाबलोपनिषद् में मिलता है।
- नारियों की स्थिति में गिरावट आई। अथर्ववेद में कन्या के जन्म की निंदा ऐतरेय ब्राह्मण (कन्या को चिन्ता का कारण), तैत्तिरीय आरण्यक (स्त्रियों को शूद्रवत पतित), शतपथ ब्राह्मणों में पत्नी को (अर्धांगिनी) कहा गया है।
- विदुषी महिलाएं- मैत्रेयी, गार्गी, सलवा, वणवा, काव्यायनी आदि।
- स्त्रियों की सभा एवं समिति, उपनयन संस्कार में भाग लेना बंद हो गया

आर्थिक जीवन

- ग्रामीण सभ्यता थी जहां अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पशुपालन था तथा कृषि गौण कार्य था।
- गाय का उल्लेख 176 बार हुआ है।
- शब्दों की उत्पत्ति गाय से हुई है, जैसे मोहना (अतिथि), गोमत् (धनी व्यक्ति), गोधूली (संध्या का समय), अधन्या (न मारी जाने वाली गाय), गोविष्टि (गाय का अन्वेषण)।
- इस काल में बढई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों का उल्लेख।
- आर्यस शब्द का प्रयोग ताँबे या काँसे से।

- प्रमुख आधार कृषि, प्रमुख फसलें जैसे ब्रीहि (चावल) माष उड़द, यव (जौ), गोधूम (गेहूँ)।
- अयस= श्याम या कृष्ण अयस (लोहा) तथा लौह अयस (ताँबा)
- शतपथ ब्राह्मण में हल संबंधी विधान का वर्णन है।
- चित्रित घूसर मृदभांड के साक्ष्य (Painted Grey Ware-PWG)
- 1000 ई.पू. लोहा सर्वप्रथम कर्नाटक के धारवाड़ में मिला।
- सर्वाधिक लौह औजार अतरंजी खेड़ा से प्राप्त हुए हैं।
- खेती और विविध शिल्पों की बढ़ती अब लोग स्थायी जीवन अपनाने लगे

राजनीतिक जीवन

- प्रशासन- कबीले का प्रधान द्वारा जिसे राजन् (राजा) कहा जाता था। अनेक
- कुल (प्रधान-कुलप) -ग्राम (प्रधान-ग्रामिणी)-विश (प्रधान विशपति), जन (प्रधान-राजन) का निर्माण करते थे।
- राज्य स्थापित नहीं था। ऋग्वेद में जन शब्द का उल्लेख 275 बार हुआ है
- संगठन- सभा, समिति, विदथ, गुण।

- राजकीय प्रभुत्व सामने आया। विषय लगभग समाप्त एवं सभा-समिति का प्रभाव भी कम हुआ।
- कबीलों ने जनपद रूप ग्रहण किया जैसे-भरत + पुरु = कुरु जनपद, तुर्वस + क्रिवि = पांचाल जनपद की स्थापना की।
- राजाओं को विभिन्न नामों से पुकारा जाता था।
- राजा का पद आनुवांशिक, जो सामान्यतः उसके ज्येष्ठ पुत्र को। प्रमुख अधिकारी संग्रहीत, गोविकर्तन। राजाओं का प्रभाव यज्ञों द्वारा।
- राजसूय यज्ञ : राज्याभिषेक के समय।
- अश्वमेध यज्ञ : साम्राज्य विस्तार के लिए।
- वाजपेय यज्ञ : रथदौड़ की आकांक्षा से।

धार्मिक जीवन

- वैदिक ग्रंथों में कुल 33 देवताओं का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में सबसे अधिक प्रतापी देव इंद्र थे
- पुरुंदर (किला तोड़ने वाला) या वृतहन्ता या सोमापा कहा जाता है।
- इन्द्र पर 250 सूक्त हैं। इन्हें बादल का देवता।
- ऋग्वैदिक देवताओं में (दूसरा स्थान अग्नि का है)
- 200 सूक्त है। तीसरा स्थान वरुण का है, (प्राकृतिक संतुलन का रक्षक) उल्लेख 176 बार किया गया है।

- धर्म, कर्मकाण्ड आधारित। महत्वपूर्ण देवता थे- प्रजापति (ब्रह्मा) शिव (रूद्र), तथा नारायण (विष्णु)।
- पूजन जो ऋग्वैदिक काल में पशुओं के देवता थे, अब शूद्रों के देवता हो गए।
- गृहस्थों के लिए पंचमहायज्ञ- ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ अतिथि यज्ञ, भूत यज्ञ।

पंचमहायज्ञ



आश्रम व्यवस्था :

- उत्तर वैदिक काल में स्थापना इसका अर्थ श्रम करने के बाद विश्राम करना।
- छांदोग्य उपनिषद् में केवल 3 आश्रमों का उल्लेख
- जबलोपनिषद् में चारों आश्रम का उल्लेख एक साथ मिलता है।

आश्रम	आयु	कार्य	पुरुषार्थ
1. ब्रह्मचर्य	0-25 वर्ष	ज्ञान प्राप्ति	धर्म
2. गृहस्थ	25-50 वर्ष	सांसारिक जीवन	अर्थ व काम
3. वानप्रस्थ	50-75 वर्ष	ईश्वर ज्ञान	मोक्ष
4. सन्यास	75-100 वर्ष	मोक्ष हेतु तपस्या	मोक्ष

- गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रम में श्रेष्ठ माना गया है
- इसी आश्रम में पंच महायज्ञ (ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृयज्ञ/मनुष्य यज्ञ, भूत/बलि यज्ञ)
- त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) व त्रि-ऋण-
1. ऋषि ऋण- वैदिक ग्रंथों का अध्ययन, 2. पुत्र ऋण - पुत्र की उत्पत्ति, 3. देव ऋण- धार्मिक अनुष्ठान एवं यज्ञ। आदि से निवृत्त होना आवश्यक था।

अन्य तथ्य :- ऋग्वैदिक देवता

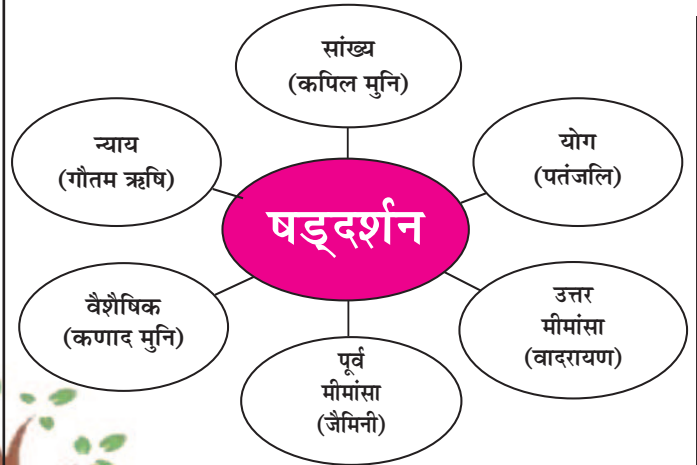
सोम	वनस्पति के देवता
मरुत	आँधी का देवता
उषा	प्रगति एवं उत्थान की देवी
पूषण	पशुओं के देवता
अरण्यानी	जंगल की देवी
द्यौ	आकाश का देवता

आर्यों की भौगोलिक सीमा-

उत्तर वैदिक काल में आर्यों का भौगोलिक विस्तार उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्यपर्वतमाला, पश्चिम में अफगानिस्तान एवं पूर्व में उत्तरी बिहार तक था।

षड्दर्शन

- उत्तर वैदिक काल में ही षड्दर्शन का उदय हुआ।



16 संस्कार

संस्कार का अर्थ- परिष्कार/शुद्धिकरण। सर्वप्रथम उल्लेख अश्वालायन कृत गृह्य सूत्र में प्राप्त होता है।

16 प्रमुख संस्कार

क्र.	संस्कार	उद्देश्य
1	गर्भाधान	नार-नारी का मिलन/गर्भधारण हेतु।
2	पुंसवन	गर्भ-रक्षो वे पुत्र-प्राप्ति हेतु।
3	सीमांतोन्नयन	गर्भस्थ शिशु की मानसिक वृद्धि हेतु।
4	जातकर्म	शिशु उत्पन्न होने पर पिता द्वारा शिशु को आशीर्वाद देने व शहद चटाने का कर्म।
5	नामकरण/नामधेय	शिशु का नामकरण
6	निष्क्रमण	गृह से बाहर लाने का कर्म (शिशु के पिता या मामा द्वारा)
7	अन्नप्राशन	अन्नादि चटाने का कर्म।
8	चूड़ाकर्म/मुंडन	केश मुंडन का कर्म (केवल बालकों तक सीमित)
9	कर्ण-वेध	कान छेदने का कर्म।
10	विद्यारम्भ	गुरु के समीप ले जाकर शिशु को अक्षर-ज्ञान कराने का कर्म।
11	उपनयन	यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण कर ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश।
12	वेदारम्भ	वेद आरंभ करने का कर्म।
13	समावर्तन	शिक्षा पूर्ण होने पर मेषधर्म, वंड आदि को जल में फेंककर घर की ओर लौटाना
14	विवाह	25 वर्ष पूर्ण होने पर विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश
15	वानप्रस्थ	50 वर्ष पूर्ण होने पर वन की ओर प्रस्थान
16	अंत्येष्टि	मृत्यु के पश्चात् दाह संस्कार (अंतिम संस्कार)

विवाह

- **अनुलोम विवाह** : इसमें पुरुष उच्च वर्ण का एवं महिला निम्न वर्ण की होती थी।
- **प्रतिलोम विवाह** : इसमें पुरुष निम्न वर्ण का एवं महिला उच्च वर्ण की होती थी।
- **गृहसूत्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाह होते हैं।**

1. ब्रह्म विवाह यह सबसे प्रचलित एवं उत्तर विवाह था।

2. दैव विवाह यज्ञ करने वाले ब्राह्मण से पुत्री का विवाह किया जाता था।

3. आर्य विवाह कन्या का पिता वर से गाय लेकर कन्या का विवाह कर देता था।

4. प्रजापत्य विवाह इसमें कन्या का पिता वर को वचन देता था।

5. असुर विवाह वर से मूल्य लेकर कन्या को बेचा जाता था।

6. गंधर्व विवाह यह प्रेम विवाह था, जिसमें माता-पिता की अनुमति नहीं ली जाती थी।

7. राक्षस विवाह इस विवाह में वधू का अपहरण किया जाता था।

8. पैशाच विवाह यह जबरदस्ती किया जाने वाला विवाह था।

प्रमुख रत्नी

- | | |
|-------------|--------------------|
| ➤ सैना | सेनापति |
| ➤ ग्रामीणी | गाँ का मुखिया |
| ➤ संग्रहिता | कोषाध्यक्ष |
| ➤ मागदुध | कर संग्रहक |
| ➤ सूत | रथ सेना का नायक |
| ➤ गोविकर्तन | गवाध्यक्ष, वनपाल |
| ➤ अक्षावाप | आय-व्यय गणनाध्यक्ष |
| ➤ पालागल | विदूषक का पूर्वज |
| ➤ महिषी | रानी |
| ➤ तक्षण | बढ़ई |

कृषि संबंधी शब्दावली

- | प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
|-------------|------------|
| ➤ लांगल | हल |
| ➤ वृक | बैल |

- | | |
|-----------|-------------------|
| ➤ उर्वरा | जुते हुए खेत |
| ➤ सीता | हल से बनी नालियाँ |
| ➤ अवट | कूप (कुआँ) |
| ➤ पर्जन्य | बादल |
| ➤ अनस | बैलगाड़ी |
| ➤ कीनाश | हलवाहा |

वैदिक साहित्य-सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन

- ⇒ वो जैन तीर्थकरों **अरिष्टनेमि** एवं **पार्श्वनाथ** का सर्वप्रथम उल्लेख- **ऋग्वेद**
- ⇒ **असतो मा सद्गमय** का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद**
- ⇒ सबसे प्राचीन ब्राह्मण ग्रंथ- **कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण**
- ⇒ सबसे प्राचीन उपनिषद **छान्दोग्य** एवं **वृहदारण्यक**
- ⇒ प्रथम तीन आश्रम (बाल, गृहस्थ, वानप्रस्थ) एवं श्रीकृष्ण का प्रथम उल्लेख **छान्दोग्योपनिषद**
- ⇒ चारों आश्रम का सर्वप्रथम उल्लेख **जाबलोपनिषद**
- ⇒ पुनर्जन्म का सर्वप्रथम उल्लेख- **शतपथ ब्राह्मण/वृहदारण्यकोपनिषद**
- ⇒ गीता से पहले निष्काम कर्मयोग का सर्वप्रथम प्रतिपादन- **इषोपनिषद**
- ⇒ भरत कबीले का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद**
- ⇒ ऋग्वैदिक काल सर्वप्रथम देवता- **इन्द्र**
- ⇒ उत्तर वैदिक काल का सर्वप्रमुख देवता **प्रजापति**
- ⇒ राजसूय यज्ञ का सर्वप्रथम उल्लेख **ऐतरेय ब्राह्मण**
- ⇒ ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली धातु **अयस** (काँस्य या ताँबा)
- ⇒ ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक स्तुत्य नदी- **सिन्धु**
- ⇒ ऋग्वेद की सबसे पवित्र नदी- **सरस्वती**
- ⇒ चारों वर्ण का सर्वप्रथम उल्लेख- **ऐतरेय ब्राह्मण**
- ⇒ याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद उल्लिखित है- **वृहदारण्यकोपनिषद**
- ⇒ वैश्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मिलता है- **वाजसनेयी संहिता**
- ⇒ श्वेताम्बर उपनिषद समर्पित है- **रुद्र देवता को।**
- ⇒ कृषि संबंधी प्रक्रिया का उल्लेख ऋग्वेद के किस मण्डल में है? - **चतुर्थ मण्डल**

छठी सदी ईसा पूर्व में मध्य एवं निम्न गंगा के मैदानों में 62 धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिसमें जैन संप्रदाय और बौद्ध संप्रदाय सबसे महत्वपूर्ण थे तथा धार्मिक सुधारों के परम शक्तिशाली आंदोलनों के रूप में उभरे।

जैन धर्म

- जैन धर्म एक प्रतिक्रियावादी धर्म है। जिसके प्रवर्तक ऋषभदेव का उल्लेख ऋग्वेद में है।
- जैन धर्म की उत्पत्ति जिन से हुई, जिसका तात्पर्य है विजेता।
- तीर्थंकर का तात्पर्य है, जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को मार्ग दिखाए।

जैन तीर्थंकर

1. ऋषभदेव (वृषभ)	13. विमलनाथ
2. अजितनाथ (हाथी गज)	14. अनन्तनाथ
3. सम्भवनाथ	15. धर्मनाथ
4. अभिनन्दन	16. शांतिनाथ (हिरण)
5. सुमतिनाथ	17. कुन्थुनाथ
6. पद्मप्रभु	18. अर्जुनाथ
7. सुपार्श्वनाथ	19. मल्लिनाथ (कलश)
8. चन्द्रप्रभु	20. मुनिसुब्रत
9. सुविधिनाथ	21. नेमिनाथ (नीलोत्पल)
10. शीतलनाथ	22. अरिष्टनेमि (शंख)
11. श्रेयांसनाथ	23. पार्श्वनाथ (साँप)
12. वासुपूज्य	24. महावीर (सिंह)

जैन धर्म के सिद्धांत

- जैन धर्म के पाँच व्रत हैं -
- पहले चार महाव्रत का प्रतिपादन पार्श्वनाथ (23वें तीर्थंकर) ने किया।
- पाँचवां महाव्रत महावीर द्वारा जोड़ा गया।

24वें तीर्थंकर: महावीर

जन्म	540 ई.पू.
जन्मस्थल	वैशाली के कुण्डग्राम के निकट बिहार
पिता	सिद्धार्थ (वज्जि संघ के, कुण्डग्राम के ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के प्रधान)
माता	त्रिशला (लिच्छवी शासक चेटक की बहन)
बचपन का नाम	वर्द्धमान महावीर
पत्नी	यशोदा (कुण्डिय गोत्रके राजा समरवती की कन्या)
पुत्री	प्रियदर्शना (अणोज्जा)
दामाद	जमालि/जामालि (प्रथम विरोधी) (ज्ञान प्राप्ति के 14वें वर्ष)
शिष्य	मखलि पुत्र गोशाल (आजीवक संप्रदाय के संस्थापक)
प्रथम शिष्य	जमाली/जामालि (दामाद)
द्वितीय विरोधी	तीसगुप्त (ज्ञान प्राप्ति के 16वें वर्ष)
गृह त्याग	30 वर्ष की आयु में बड़े भाई नन्दिवर्द्धन की आज्ञा से)
ज्ञान प्राप्ति	12वर्ष की तपस्या के पश्चात्।
ज्ञान प्राप्त स्थल	जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर
साल वृक्ष	इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति
प्रमुख उपदेश	राजगृह में वितुलाचल पहाड़ी पर स्थित वाराक नदी के तट पर
प्रमुख उपाधि	केवलिन (केवल्य-सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त व्यक्ति), जिन (विजेता), निर्ग्रन्थ (बंधनरहित), अर्हत् (पूज्य)।
जीवन के अंत में निर्वाण	पावापुरी (राजगृह) बिहार में 72 वर्ष की आयु में 468 ई.पू. में संस्तिपाल के यहाँ (मल्ल गणराज्य के प्रधान का शासित क्षेत्र)



पंच महाव्रत

अहिंसा: हिंसा नहीं करना

सत्य : झूठ न बोलना

अस्तेय : चोरी न करना

अपरिग्रह: संपत्ति अर्जित नहीं करना

ब्रह्मचर्य: इन्द्रिय निग्रह करना अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना

त्रिरत्न

- जैन धर्म के तीन त्रिरत्न थे जिनके द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता था।

त्रिरत्न

सम्यक ज्ञान

सम्यक दर्शन

सम्यक चरित्र/आचरण

अन्य सिद्धांत

- **स्यादवाद**- जैन धर्म के अनुसार नय (आंशिक ज्ञान) होते हैं, जिन्हें स्यादवाद कहते हैं। इसे अनेकांतवाद और सप्तभंगी भी कहा जाता है।
- **संलेखना**- निराहार एवं निर्जल रहकर प्राण त्याग करना। चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसी पद्धति से अपने प्राण त्यागे थे।
- **देवताओं का अस्तित्व**- जैन धर्म ने देवताओं के अस्तित्व को स्वीकारा परंतु उसका स्थान जिन के नीचे रखा।
- **वर्णव्यवस्था**- महावीर के अनुसार पूर्व जन्म में अर्जित पुण्य या पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च या निम्न कुल में होता है।

जैन धर्म का प्रसार

- **वन्दना** (चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री) महावीर की प्रथम भिक्षुणी बनी।
- महावीर के प्रधान शिष्यों की संख्या 11 थी। जिन्हें गणधर कहा जाता था।
- **प्राकृत भाषा** में धर्म का प्रचार किया तथा जैन धर्म के प्रचार के लिए पावापुरी में एक जैन संघ की स्थापना की।
- आनंद, सुरदेव, कामदेव, कुण्डकोलिय आदि उनके प्रमुख शिष्य थे।
- महावीर की मृत्यु के बाद सुधर्मन जैन संघ का अध्यक्ष बना।

महावीर के अनुयायी शासक वर्ग

- लिच्छवी नरेश चेतक, चन्द्रगुप्त मौर्य, अमोघवर्ष (राष्ट्रकूट), खारवेल (कलिंग नरेश), चण्डप्रद्योत

(अवंति नरेश), दधिवाहन (चंपा नरेश)।

जैन धर्म का विभाजन

जैन ग्रंथ परिशिष्ट पर्वत (कृति: हेमचन्द्र) के अनुसार मगध में 12 वर्षों तक लंबा अकाल पड़ा।

- भद्रबाहु के नेतृत्व में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) चले गए। शेष जैन लोग स्थूलभद्र के नेतृत्व मगध में ही रुक गए।
- भद्रबाहु के अनुयायी दिगम्बर कहलाए। स्थूलभद्र के अनुयायी श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण) कहलाए
- श्वेताम्बर मानते थे कि 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।

जैन धर्म के विभिन्न संप्रदाय

दिगम्बर

बीस पंथी,
तेरहपंथी,
तारणपंथी,
तोतापंथी
गुमानपंथी

श्वेताम्बर

पुजेरा/डेरावासी,
ढुड़िया/स्थानकवासी

प्रथम जैन संगीति	दूसरी जैन संगीति
(300 ई.पू. लगभग)	(512 ई.)
अध्यक्ष स्थूलभद्र	अध्यक्ष देवाधिधर्मिणी या क्षमाश्रमण
स्थान - पाटलिपुत्र	स्थान- वल्लभी (गुजरात)
शासक - चन्द्रगुप्त मौर्य	परिणाम: जैन ग्रंथों को अंतिम रूप से लिपिबद्ध किया गया।
परिणाम : जैन धर्म श्वेताम्बर एवं दिगम्बर शाखाओं में बंटा।	

जैन धर्म की भिक्षाओं का संकलन 12 अंगों में किया गया।

- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है। इसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, 4 मूल सूत्र होते हैं।
- ग्रंथ अर्द्धमाघधी में लिखे गए,
- भद्रबाहु: कल्पसूत्र की संस्कृत में लिखा।
- प्रभाचन्द्र: प्रमेय कमलमार्तण्ड की रचना की, भगवती सूत्र: 16 महाजनपदों का उल्लेख।
- आचारांगसूत्र : जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का उल्लेख।

बौद्ध धर्म

- **संस्थापक-** गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में कपिलवस्तु (पिपरहवा) के निकट नेपाल की तराई में अवस्थित लुम्बिनी (रुम्मिनदेई) में हुआ था।
- उन्होंने जीवन से संबंधित चार दृश्यों से प्रभावित होकर घर का त्याग किया।

1. वद्ध व्यक्ति को देखना
2. रोगी को देखना
3. मृतक को देखना
4. सन्यासी को देखना

ज्ञान प्राप्ति

- बुद्ध को तथागत (वस्तुओं के वास्तविक जानकार), मैत्रेय और शाक्यमुनि भी कहा जाता है।

बुद्ध के जीवन की घटनाएँ एवं उनके प्रतीक

क्र.	घटना	प्रतीक
1.	गर्भ	हाथी
2.	जन्म	कमल
3.	यौवन	साँड़
4.	गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण)	घोड़ा
5.	ज्ञान प्राप्ति (सम्बोधि)	बोधिवृक्ष (पीपल)
6.	समृद्धि	शेर
7.	प्रथम प्रवचन (धर्म चक्र प्रवर्तन)	चक्र
8.	निर्वाण	पदचिन्ह
9.	मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	स्तूप

बुद्ध के जीवन

क्र.	घटना	स्थान
1.	जन्म	लुम्बिनी
2.	प्रथम प्रवचन	सारनाथ
3.	ज्ञान प्राप्ति	बोधगया
4.	निधन (महापरिनिर्वाण)	कुशीनगर



बौद्ध धर्म के वास्तविक संस्थापक: महत्मा बुद्ध

जन्म	563 ई.पू.	
जन्मस्थल	लुम्बिनी वन (कपिलवस्तु- वर्तमान रुम्मिनदेई, नेपाल)	
पिता	शुद्धोधन (शाक्यों के राज्य कपिलवस्तु के शासक)	
माता	महामाया देवी (कोलिय गणराज्य)	
बचपन का नाम	सिद्धार्थ (गौत्र-गौतम)	
पालन पोषण	विमाता प्रजापति गौतमी	
विवाह	16 वर्ष की अवस्था में (यशोधरा-कोलिय गणराज्य की राजकुमारी)	
पुत्र	राहुल	
गृह त्याग की घटना	महाभिनिष्क्रमण (29वर्ष)	
सारथी	चन्ना	
घोड़ा	कथंक	
ध्यान गुरु/ प्रथम गुरु	अलार कालाम	
ज्ञान प्राप्ति	35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध कहलाए	
ज्ञान प्राप्ति स्थल	गया (बोधगया, बिहार) निरंजना नदी का तट (घटना सम्बोधि)	
वट/पीपल वृक्ष	इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति	
प्रथम उपदेश	स्थल-ऋषि पत्तन (सारनाथ)	
(पाली भाषा)	स्थान वाली- पाँच ब्राह्मण (पंचवर्गीय)	
घटना- धर्मचक्र प्रवर्तन		
शिष्य	आनंद व उपालि	
धर्म प्रचार का स्थल	शाक्य, काशी, मगध, अंग, मल्ल, वज्जि, कोशल राज्य।	
जीवन का अंत	483 ई.पू. आयु 80 वर्ष, दिन-वैशाख पूर्णिमा, स्थल-कुशीनगर (उत्तर प्रदेश), कसिया गाँव- महापरिनिर्वाण (मृत्यु के बाद)।	

धर्म चक्रप्रवर्तन

- प्रथम प्रवचन ऋषिपत्तन (सारनाथ) में पाँच ब्राह्मणों (भद्विय, वप्प, अज्ज, अस्सजि, कौडिण्य) को दिया।
- आनंद, बुद्ध का प्रिय शिष्य था, इनके कहने पर ही बुद्ध ने बौद्ध संघ में स्त्रियों को प्रवेश की अनुमति दी थी। महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की विमाता) को सर्वप्रथम बौद्ध संघ में प्रवेश मिला।

महापरिनिर्वाण

- गौतम बुद्ध 80 वर्ष की उम्र में 483 ई.पू. में चुन्द नामक एक कर्मकार के हाथ सूकर खाने के उपरान्त कुशीनगर (कुशीनारा) में स्वर्गवासी हुए।
- बुद्ध की मृत्यु के बात उनके अवशेषों को आठ भागों में बांट कर आठ स्तूपों का निर्माण किया गया।

बुद्ध के अनुयायी

आनंद, उपालि, सारीपुत्र, जीवक, अजातशत्रु (मगध नरेश), अशोक, देवदत्त, घोषाल, महाप्रजापति गौतमी, बिम्बिसार की पत्नी क्षमा, सुनंदा, यशोधरा, प्रसेनजीत (कौशल नरेश)

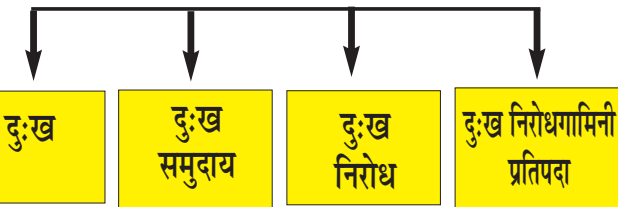
बुद्ध का भ्रमण

- बुद्ध ने लगातार भ्रमण कर (केवल वर्षा ऋतु छोड़कर) चालीस साल तक उपदेश दिए।
- उन्होंने सर्वाधिक उपदेश कौशल प्रदेश की राजधानी (श्रावस्ती) में दिए।

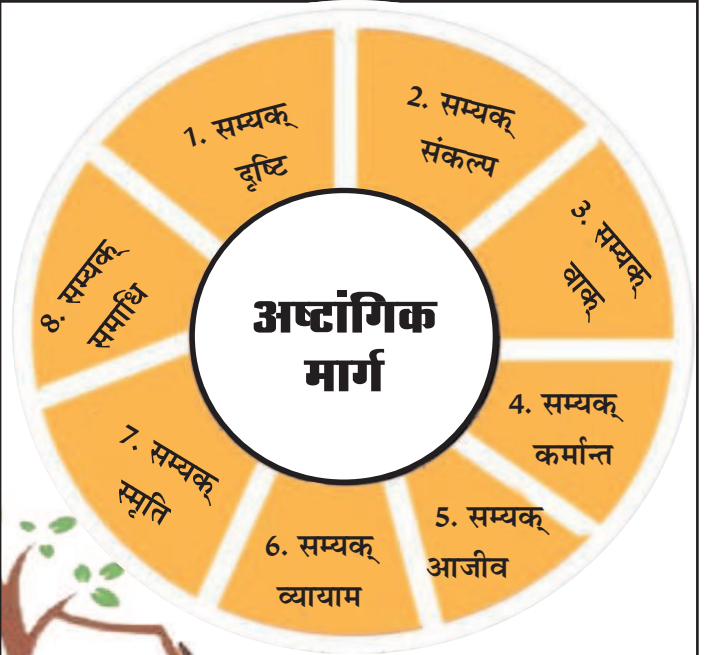
बौद्ध धर्म के सिद्धांत

- आर्य सत्य: बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के संबंध में 4 आर्य सत्यों का उपदेश दिया।

चार आर्य सत्य



- अष्टांगिक मार्ग : बुद्ध की निवृत्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग (अष्टविध साधन) बताया।
- आठ साधन हैं, उन्होंने इस संबंध में मध्यम प्रतिपदा (मध्यम मार्ग) को अपनाया।



- पुर्नजन्म एवं कर्म सिद्धांत: मूलतः अनीश्वरवादी एवं अनात्मवादी परन्तु हिन्दू एवं जैनधर्म की भांति पुर्नजन्म को मान्यता है।
- मोक्ष/निर्वाण : निर्वाण बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है, जिसका अर्थ है दीपक का बुझ जाना अर्थात जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना।
- पंचस्कन्ध : इस धर्म में मानव शरीर को पंचस्कन्ध (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार व विज्ञान) से निर्मित माना गया है।
- त्रिरत्न : बुद्ध धम्म एवं संघ हैं।

बौद्ध संगीतियाँ

क्र.सं.	स्थान	समय	अध्यक्ष	शासनकाल
प्रथम	राजगृह	483 ई.पू.	महाकस्सप	अजातशत्रु
द्वितीय	वैशाली	383 ई.पू.	सबकामीर	कालाशोक
तृतीय	पाटलिपुत्र	251 ई.पू.	मोगलिपुत्ततिस्य	अशोक
चतुर्थ	कुण्डलवन	102 ई. की	वसुमित्र	कनिष्क

- प्रथम बौद्धसंगीति में आनंद तथा उपालि ने क्रमशः सुत पिटक एवं विनय पिटक ग्रंथों की रचना की।
- द्वितीय बौद्ध संगीति में कुछ भिक्षुओं ने संघ से अलग होकर महासंधिक नामक संप्रदाय बनाया। अन्य धेरावादिन कहलाए।
- तृतीय बौद्धसंगीति : मोगलिपुत्ततिस्य ने अभिधम्मपिटक की रचना की।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान संप्रदाय में बंट गया।

- बौद्ध धर्म के सबसे प्राचीन ग्रंथ **त्रिपिटक** है।
- 1. **विनय पिटक** : बौद्ध धर्म के नियमों का वर्णन।
- 2. **सुतपिटक** : धार्मिक विचारों एवं वचनों का संग्रह।
- 3. **अभिधम्म पिटक** : बौद्ध दर्शन का वर्णन।
- 16 महाजनपदों का वर्णन **अंगुत्तरनिकाय** में है।

दसशील

1. अहिंसा,
 2. सत्य,
 3. असत्य (चोरी न करना),
 4. पराये धन का लोभ नहीं करना,
 5. नशे का सेवन न करना,
 6. स्त्रियों से दूर रहना,
 7. दुराचार से दूर रहना,
 8. असमय भोजन नहीं करना,
 9. संगंधित पदार्थ वर्जित,
 10. आभूषणों का त्याग।
- बुद्ध ने अपने उपदेशों का प्रचार **पाली भाषा** में किया।
 - बौद्ध धर्म के अनुसार **मोक्ष** इस जीवन में भी संभव है, इसे प्राप्त करने के लिए मृत्यु आवश्यक नहीं है।
 - **मिलिदपान्हो**: बौद्ध भिक्षुक **नागसेन** एवं यूनानी राजा **मिनाण्डर** का दार्शनिक वार्तालाप है।
 - **जातक**: बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाओं का वर्णन है।

बौद्ध धर्म विशिष्ट तथ्य

- **महायान शाखा** के अंतर्गत बुद्ध की पहली मूर्ति बनी
- **बौधिसत्त्व** की अवधारणा का विकास (महायान शाखा से हुआ। कुल चार बोधिसत्त्व वर्णित हैं। **मंजुश्री वज्रपणि**, **पद्मपणि** (अवलोकितेश्वर) एवं **मैत्रेय** (अभी अवतरित होना शेष है)।
- बमाल के शैव शासक **शशांक** ने बोधिवृक्ष को कटवा दिया था।
- **कनिष्क**, **हर्षवर्धन**, महायान शाखा के पोषक शासक थे।

बौद्ध धर्म का विभाजन

हीनयान

महायान

वैभाषिक सौत्रान्तिक माध्यमिक योगाचार

- माध्यमिक/शून्यवाद प्रतिपादक **नार्गार्जुन** थे।
- योगाचार/विज्ञानवाद के प्रतिपादक **मैत्रेयनाथ** थे।

कुछ अन्य प्रमुख संप्रदाय

संप्रदाय	प्रवर्तक
आजीवक	मक्खाली घोषाल
नित्यवादी	पकुंध कच्चायन
संदेहवादी	संजय वेलठपुत्र
(अनिश्चयवादी)	
अक्रियावादी	पुरण कश्यप
भौतिकवादी	अजीत केशकाम्बलिन

वैष्णव धर्म (भागवत धर्म)

- वैष्णव धर्म का केन्द्र बिंदु **भगवत/विष्णु** की पूजा है।
- **भागवत संप्रदाय** के प्रमुख तत्व हैं भक्ति एवं अहिंसा, भक्ति का अर्थ है, प्रेममय निष्ठा निवेदन एवं अहिंसा का अर्थ है, किसी जीवन का वध न करना।
- **वैष्णव संप्रदाय** ने अवतारवाद का उपदेश दिया और इतिहास को **विष्णु के दस अवतारों** के चक्र के रूप में प्रतिपादित किया है।
- **विष्णु के दस अवतार हैं-** मत्स्य ➤ कूर्म ➤ वाराह ➤ नरसिंह ➤ वामन ➤ परशुराम ➤ राम ➤ बलराम ➤ बुद्ध ➤ कल्कि।
- **कृष्ण** का उल्लेख सर्वप्रथम **छांदोग्य उपनिषद्** में मिलता है।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास **गुप्त काल** में हुआ।

शैव धर्म

- शैव धर्म के लोग भगवान **शिव** की उपासना करते हैं।
- **मत्स्यपुराण** में **लिंग पूजा** का पहला स्पष्ट वर्णन मिलता है।
- **शैवधर्म के अन्य संप्रदाय:** पशुपति, कापालिक, कालामुख, लिंगायत आदि का विकास हुआ। इसका वर्णन **वामन पुराण** में मिलता है
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव **भैरव** थे।
- कालामुख संप्रदाय के लोग को **महाव्रतधर** कहा जाता है।
- **लिंगायत** को जंगम या **वीरशैव संप्रदाय** भी कहा जाता है। प्रवर्तक **अल्लभ प्रभु** और इनके शिष्य **वासन** थे।
- **पाशुपत** संप्रदाय के संस्थापक **लकुलीश** थे।
- **अथर्ववेद** में शिव, भव, पशुपति या भूपति कहा गया है।
- **नयनार** संतों ने दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार प्रसार किया।
- **नाथ संप्रदाय-** इसकी स्थापना **मत्स्येन्द्र नाथ** ने की थी। इसके प्रमुख प्रचारक बाबा **गोरखनाथ** थे।

- छठी शताब्दी ई. पू. में दूसरी नागरिक क्रांति हुई, जिसमें 16 महाजनपद का उदय हुआ जिसमें मगध आगे चलकर साम्राज्य बना।
- अंगुत्तर निकाय (बौद्ध साहित्य) एवं भगवती सूत्र (जैन साहित्य), 16 महाजनपद की जानकारी देते हैं।

1. **काशी** - वर्तमान वाराणसी एवं उसका समीपवर्ती क्षेत्र काशी महाजनपद कहलाता था। इसकी राजधानी वाराणसी थी जो वरुण एवं अस्सी नदियों के बीच में थी।

2. **अंग** - वर्तमान भागलपुर एवं मुंगेर (बिहार) के क्षेत्र आते थे। राजधानी चंपा थी एवं शासक ब्रह्मदेव था। बाद में बिम्बिसार ने अंग को मगध में मिलाया।

3. **कौशल** - वर्तमान फैजाबाद (उत्तरी प्रदेश) का क्षेत्र आता है। राजधानी श्रावस्ती थी।

4. **वत्स** - आधुनिक इलाहाबाद एवं कौशाम्बी जिला इसके अंतर्गत था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। अवन्ति महाजनपद ने वत्स को अपने साम्राज्य में मिला लिया।



5. **मगध** - वर्तमान पटना व आसपास के जिलों में अवस्थित था। इसकी राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) थी। यहाँ पर सर्वप्रथम हर्यक वंश का शासक था।

6. **वज्जि** - यह आठ राज्यों का संघ था। यह एक गणतंत्र महाजनपद था। इसकी एक प्रमुख संघ लिच्छवी था जिसकी राजधानी वैशाली थी।

7. **मल्ल** - एक गणतंत्र महाजनपद था जो आधुनिक गोरखपुर एवं देवरिया जिलों में अवस्थित था। कुशीनगर/कुशावती यहाँ की राजधानी थी।

8. **मत्स्य** - विस्तार आधुनिक राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में था। इसकी राजधानी विराटनगर थी।

9. **कुरु** - यह वर्तमान हरियाणा, दिल्ली व मेरठ में अवस्थित था। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी (दिल्ली का प्राचीन नाम योगिनीपुर था)।

10. **चेदि** - इसमें वर्तमान बुंदेलखंड का क्षेत्र शामिल था और

शक्तिमती इसकी राजधानी थी। शासक शिशुपाल था।

11. **पांचाल** - वर्तमान उत्तर प्रदेश बरेली, बदायूँ व फर्रुखाबाद जिला। मूलतः राजतंत्र की कौटिल्य के समय गणराज्य



द्रोपदी भी पांचाल की राजकुमारी थी।

12. **शूरसेन** :- वर्तमान उत्तर प्रदेश का मथुरा जिला। राजधानी मथुरा थी। कृष्ण यही के राजा थे।

13. **अश्मक** :- वर्तमान आंध्र प्रदेश राज्य। राजधानी पोतना/पोटिल। जर्मदा नदी के दक्षिण में गोदावरी तट पर स्थित एकमात्र महाजनपद है।

14. **गांधार** :- वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर व रावलपिंडी क्षेत्र। राजधानी तक्षशिला। प्रमुख नगर पुष्कलावती, जहाँ का राजा पुष्कर-सारिन था। अवन्ति के शासक चण्डप्रद्योत का हराया था।

15. **कम्बोज** :- पाकिस्तान व भारत का क्षेत्र। राजधानी राजपुर/हाटक थी। श्रेष्ठ घोड़ों के लिए विख्यात था।

16. **अवन्ति** :- मध्यप्रदेश के खरगौन व उज्जैन जिला। प्रमुख शासक चण्डप्रद्योत था जिसे पीलिया नामक रोग हो गया था। बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को भेजाता तथा पुरोहित महाकच्चायन के प्रभाव से चण्डाप्रद्योत बौद्ध बन गया। अवन्ति को मगध सम्राट शिशुनाग द्वारा मगध में मिला लिया।

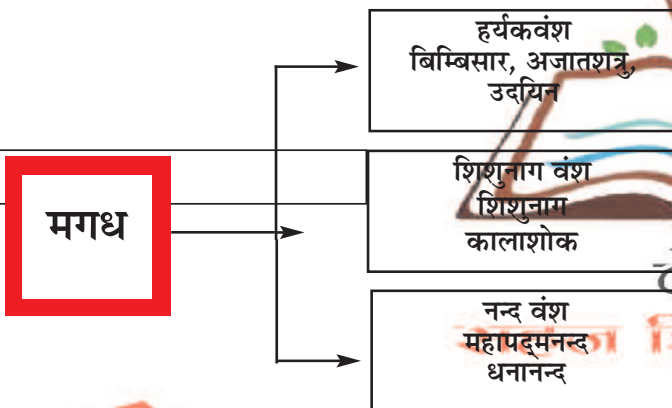




□ नोट:

छठी शताब्दी ई.पू. के आगे के भारत का राजनीतिक इतिहास, महाजनपदों के बीच प्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्ष का इतिहास है। मगध राज्य सबसे शक्तिशाली बन गया और साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुआ।

- अथर्ववेद में मगध का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। महाकाव्यों के अनुसार बृहद्रथ ने मगध राज्य की स्थापना की थी। वह वसु का पुत्र एवं जरासंध का पिता था।



हर्यक वंश (पितृहन्ता वंश) - 544 ई.पू. से 412 ई.पू.

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.) : यह हर्यक वंश का संस्थापक था, तथा महात्मा बुद्ध का मित्र एवं संरक्षक था।

- राजधानी- राजगृह (गिरिव्रज)।
 - बिम्बिसार को श्रेणिक (सेना रखने वाला) भी कहा जाता है।
 - बिम्बिसार ने वैवाहिक संबंधों से अपनी स्थिति मजबूत की। उसने तीन विवाह किए।
1. प्रथम पत्नी- महाकोशला देवी (कोशल राज्य की पुत्री एवं प्रसेनजीत की बहन) थी। इस विवाह से काशी दहेज में मिला।
 2. दूसरी पत्नी- लिच्छवी की राजकुमारी चेल्लना थी, जिसने अजातशत्रु को जन्म दिया।
 3. तीसरी रानी- मद्र कुल की राजकुमारी क्षेमा थी।
- बिम्बिसार ने अंग के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या करके उसे मगध में मिला लिया।

- बिम्बिसार ने अवन्ति नरेश चण्डप्रदोत से युद्ध किया, किन्तु अंत में दोनों दोस्त बन गए। जब प्रदोत को पीलिया रोग हुआ तो बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को उज्जैन भेजा।
- बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने की।

अजात शत्रु (492-460 ई.पू.)

- अजातशत्रु को कुणिक भी कहा जाता है। इसने कौशल नरेश प्रसेनजीत को पराजित किया।
- प्रसेनजीत ने पुत्री वजिरा का विवाह अजातशत्रु से कर दिया।
- यह आजीवक सम्प्रदाय तथा बौद्ध व जैन मतों का पोषक था।
- उसके शासनकाल के 8वें वर्ष में बुद्ध की मृत्यु हुई। राजगृह में स्तूप (बुद्ध के अवशेष) का निर्माण करवाया।
- राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- उसकी हत्या उसके पुत्र उदयिन ने की।

उदयिन :

- पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बनाया।
- उसने पटना में गंगा एवं सोन के संगम पर एक किला बनवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक नागदशक था। बाद में जनता ने इनके शासन को हटाकर शिशुनाग नामक आम्रात्य को राजा बनाया।

शिशुनाग वंश (412-394 ई.पू.)

- शिशुनाग जो नागदशक का आम्रात्य था, जिसने शिशुनाग वंश की स्थापना की थी।
- राजधानी - वैशाली।
- उसने अवन्ति को मगध साम्राज्य में मिलाया।

कालाशोक, उपनाम- काकवर्ण (394-366 ई.पू.)

- इसने पाटलिपुत्र को पुनः मगध की राजधानी बनाया।

- द्वितीय बौद्ध संगति कालाशोक के काल में आयोजित हुई थी।
- अंतिम शासक नंदीवर्धन था।

नन्दवंश (344-322 ई.पू.)

महापद्मनंद (344-334 ई.पू.)

- यह नन्दवंश का संस्थापक था।
- कलिंग को मगध में मिलाया। कलिंग में तिनसुलिया नामक नहर का निर्माण, विजय स्मारक के रूप में वह कलिंग से जिन की मूर्ति उठा लाया था।
- उल्लेख खारवेल, हाथी गुम्फा अभिलेख में।
- उपाधि- एकराट, उग्रसेन, अपरोपरशुराम, सर्वक्षत्रांतक

धनानन्द

- यह इस वंश का अंतिम शासक था। यह सिकन्दर का समकालीन था।
- 326 ई.पू. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया।
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ मिलकर धनानंद को पराजित किया और मौर्य वंश की स्थापना की।
- नन्दवंश के शासक जैन मत के पोषक थे।

सिकन्दर का आक्रमण

- सिकन्दर मकदूनिया के शासक फिलिप द्वितीय का पुत्र था। वह अरस्तु का शिष्य था।
- सिकन्दर ने एशिया माइनर (तुर्की), इराक एवं ईरान पर विजय प्राप्त करने के पश्चात, 326 ई. पू. में खैबर दर्रा पार करके भारत पर आक्रमण किया।
- तक्षशिला में शासक आम्बि ने सिकंदर के सामने घुटने टेक दिए।



हाइडेस्पीज/ झेलम/वितस्ता का युद्ध 326 ई.पू.

- झेलम नदी के किनारे सिकन्दर को पोरस का सामना करना पड़ा।
- सिकन्दर ने पोरस को पराजित कर दिया, मगर उसके साहस से प्रभावित होकर उसका राज्य वापस कर दिया

तथा पोरस सिकन्दर का सहयोगी बन गया।

- सिकन्दर की सेना ने व्यास (विपासा) नदी से आगे बढ़ने से इंकार कर दिया।
- वह भारत में लगभग 19 महीने (326-325 ई.पू.) रहा।
- सिकंदर ने पश्चिम भारत में कुछ यूनानी उपनिवेश स्थापित किए- काबुल में सिकन्दरिया (आधुनिक बेगम), झेलम के तट पर बुकेफाल (जहाँ सिकन्दर के घोड़े की मृत्यु हुई) एवं निकैया (जहाँ पोरस के साथ युद्ध हुआ)।

एरियन- यूनानी इतिहासकार

नियार्कस - सिकन्दर का जल सेनापति

सेल्यूकस- सिकन्दर का सेनापति

- सिकन्दर ने नियार्कस के नेतृत्व में सिंधु नदी के मुहाने से फराब नदी के मुहाने तक समुद्र तट का पता लगाने के लिए भेजा था।

सिकन्दर के विजित क्षेत्र- चार प्रशासनिक इकाईयों में बाँटा, अलग-अलग उत्तराधिकारी नियुक्त किए।

प्रथम प्रांत- सिन्धु व झेलम का भाग (तक्षशिला का शासक आम्भी को)

द्वितीय प्रांत- सिंधु नदी के पश्चिम में (फिलिप)

तृतीय प्रांत- झेलम व व्यास नदी के बीच में (पोरस)

चतुर्थ प्रांत- सिन्धु नदी का निचला भू-भाग (पिथोन)

- 323 ई. पू. बेबीलोन में सिकंदर की मृत्यु हो गई।
- सिकन्दर के आक्रमण से भारत को लाभ-
 1. क्रमागत इतिहास लिखने में सहायता।
 2. मानकतिथि का ज्ञान हुआ।
 3. यूनानी मुद्राओं के समान उलूक शैली के सिक्के ढाले जाने लगे।

- संस्थापक- चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा। चाणक्य (विष्णुगुप्त/कौटिल्य) की मदद से मगध के नन्दवंशीय शासक धनानन्द की हत्या कर मौर्यवंश की स्थापना की।

मौर्य वंश से संबंधित जानकारी विभिन्न स्रोतों से मिलती है

साहित्यिक साक्ष्य	विदेशी विवरण	पुरातात्विक साक्ष्य
<ul style="list-style-type: none"> अर्थशास्त्र पुराण मुद्राराक्षस नाटक बौद्ध एवं जैन ग्रंथ आदि 	<ul style="list-style-type: none"> मेगस्थनीज स्ट्रेबो कर्टियस आदि। 	<ul style="list-style-type: none"> अशोक के अभिलेख जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख काली पॉलिश वाले मृदभाण्ड भवन: स्तूप एवं गुफा मुद्रा : आहत मुद्रा (पंचमार्क)

स्रोत	विवरण
बौद्धग्रंथ- दीपवंश, महावंश (सिंहली ग्रंथ), दिव्यावदान महाबोधिवंश	चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय वर्ण माना। परिशिष्टपर्वन् में मोरिया जनजाति
जैनग्रंथ- परिशिष्टपर्वन् (हेमचंद्रकृत), कल्पसूत्र (भद्रबाहुकृत)	
मुद्राराक्षस- (विशाखदत्तकृत) (संस्कृत नाटक)	चन्द्रगुप्त के लिए वृषल शब्द
कथासरित्सागर- सोमदेवकृत	चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्दवंश का बताया
वृहत्कथा मंजरी- क्षेमेन्द्रकृत	
इण्डिका- मेगास्थनीज	चन्द्रगुप्त को सैंड्रोकोट्स कहा
जूनागढ़ अभिलेख- (रुद्रदामन-संस्कृत में)	चन्द्रगुप्त के नाम का उल्लेख सुदर्शन झील की जानकारी
अर्थशास्त्र- (कौटिल्य-भारत का मैकियावेली)	मौर्यवंश के राजव्यवस्था की विस्तृत जानकारी
ब्राह्मण ग्रंथ- पुराण	चन्द्रगुप्त मौर्य की माता का नाम मूरा (शूद्र) बताया गया

अशोक के शिलालेख

- अशोक के इतिहास की जानकारी उसके अभिलेखों से मिलती है। अशोक पहला भारतीय शासक था जो अभिलेखों द्वारा अपनी प्रजा को सीधे संबोधित करता था।
- लिपि- ब्राह्मी, खरोष्ठी, अराइमक एवं ग्रीक लिपि।
- ब्राह्मी लिपि- बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- खरोष्ठी लिपि- दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।
- सर्वाधिक अभिलेख भाषा प्राकृत में हैं।
- अशोक के अभिलेखों में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में पढ़ा।
- भाबू अभिलेख- अशोक ने स्वयं को सम्राट कहा है।

अशोक के अभिलेख

1 दीर्घ शिलालेख

2 लघु शिलालेख

3 पृथक शिलालेख

4 दीर्घ स्तम्भलेख

5 लघु स्तम्भलेख

शिलालेख- 14 विभिन्न लेखों का समूह, 8 भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त

शिलालेख	स्थान	खोजकर्ता
शहवाजगढ़ी	पेशावर (पाकिस्तान)	फ्रांसीसी अधिकारी
मनसेहरा	हजारा (पाकिस्तान)	कैप्टन ले
कालसी	देहरादून (उत्तराखण्ड)	जॉन फॉरेस्ट
गिरनार	जूनागढ़ (गुजरात)	ले. कर्नल टाड
धौली	पुरी (ओडिसा)	किट्टो
जौगढ़	गंजाम (ओडिसा)	सर वाल्टर इलियट
ऐरंगुडी	कुर्नूल (आंध्र प्रदेश)	-
सोपारा	थाणे (महाराष्ट्र)	

अशोक के उत्तरी-पश्चिमी शिलालेख

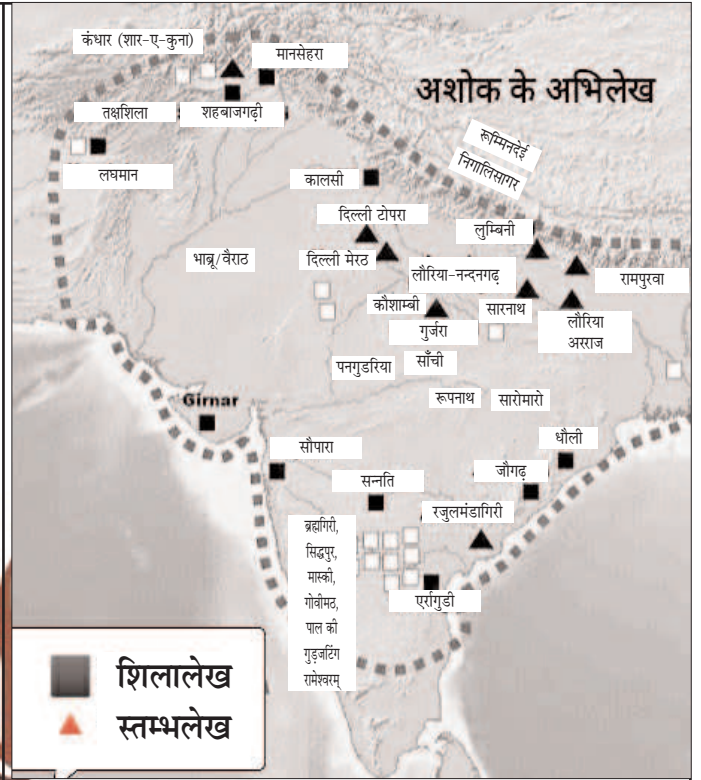
शिलालेख	स्थान	भाषा
लमगान शिलालेख	पुल ए दारुन (अफगानिस्तान)	अरमाइक
तक्षशिला शिलालेख	तक्षशिला (पाकिस्तान)	अरमाइक
कन्धार शिलालेख	शार-ए-कुना (अफगानिस्तान)	अरमाइक/यूनानी (ग्रीक)

अशोक के शिलालेखों और उनके विषय

शिलालेख	विषय
पहला शिलालेख	पशुवध निषेध
दूसरा शिलालेख	विदेशों में धम्म प्रचार एवं मनुष्य एवं पशु चिकित्सा का उल्लेख
तीसरा शिलालेख	राज्य एवं युक्त की नियुक्ति एवं अधिकारियों को हर पाँच वर्ष पर राज्य भ्रमण करने का आग्रह
चौथा शिलालेख	धम्मघोष का भेरीघोष के स्थान पर प्रतिपादन
पांचवा शिलालेख	धम्ममहामात्रों का नियुक्ति (14वें वर्ष)
छठा शिलालेख	इसमें जन मामलों को निपटाने के लिए प्रशासनिक सुधारों का उल्लेख है।
सातवाँ शिलालेख	अशोक सभी धार्मिक मतों के प्रति निष्पक्षता रखेगा।
आठवाँ शिलालेख	बोधगया की यात्रा का उल्लेख एवं बिहार यात्रा के स्थान पर धम्मयात्रा का प्रतिपादन
नवाँ शिलालेख	सच्चे विधानों एवं शिष्टाचार का वर्णन
दसवाँ शिलालेख	अशोक के उद्योग का लक्ष्य धम्माचरण की श्रेष्ठता घोषित
ग्यारहवाँ शिलालेख	धम्म नीति की व्याख्या
बारहवाँ शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता पर जोर
तेरहवाँ शिलालेख	कलिंग युद्ध के बाद धम्म विजय की घोषणा, विदेशों में धम्म प्रचार (पाँच विदेशी राज्य की चर्चा) का उल्लेख।
चौदहवाँ शिलालेख	पहले तेरह शिलालेखों का पुनरावलोकन तथा अशोक का साम्राज्य को महाल के विजित की संज्ञा।

अशोक के लघु शिलालेख

स्थान	14 लघु शिलालेख
मध्य प्रदेश	रूपनाथपुर, गुर्जरा, बुधनी (सिहोर),
उत्तर प्रदेश	अहरौरा (मिर्जापुर)
राजस्थान	बैराठ, भाबु (जयपुर)
कर्नाटक	ब्रह्मगिरि, सिद्धपुर,
पालकिगुण्डु,	जटिंगरामेश्वरम, गोवीमठ, सन्नति, मास्की
आंध्रप्रदेश	एरागुडी, रजुलमंडागिरी
बिहार	सहसारा (चंदनवीर पहाड़ी)



मौर्यों की उत्पत्ति

चन्द्रगुप्त मौर्य की जाति एवं उसका वंश विवादास्पद विषय है। उसके वंश से संबंधित विभिन्न मत हैं जो इस प्रकार हैं।

1.	ब्राह्मण परम्परा के अनुसार सूद्र - (मुरा नामक स्त्री से उत्पन्न)
2.	महावंश (बौद्ध साहित्य) - क्षत्रिय (गोरखपुर में मौर्य नामक क्षत्रिय कुल)
3.	परिशिष्ट पर्वन मोरपालक का पुत्र
4.	मुद्राराक्षस वृषल (शूद्र वंश से उत्पन्न)
5.	राजपुताना गजेटियर राजपूत

जूनागढ़ अभिलेख:

- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत भाषा का सबसे बड़ा अभिलेख)
- मौर्यकाल में निर्मित सुदर्शन झील की जानकारी मिलती है।
- झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पुष्यगुप्त वैश्य ने गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में सिंचाई व्यवस्था के लिए करवाया था।

सुदर्शन झील: पुर्ननिर्माण- यहाँ का शासक व राज्यपाल

1. अशोक- राज्यपाल तुषास्क
2. शासक रुद्रदामन- राज्यपाल सुविशाख
3. स्कन्धगुप्त- राज्यपाल के पुत्र, गिरिनार प्रशासक चक्रपालित द्वारा।

अर्थशास्त्र

कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्य वंश के राजव्यवस्था की विस्तृत जानकारी देता है। यह 15 अधिकरणों, 180 प्रकरण 6000 श्लोक हैं,

- भाषा शैली (अन्य पुरुष), सर्वप्रथम प्रकाशन-डॉ.शाम शास्त्री (1909)
- तुलना मैकियावेली के प्रिंस से की जाती है। अर्थशास्त्र मुख्यतः सूत्र के गद्य रूप (संस्कृत) में है।

सप्तांग सिद्धांत :

➤ राज्य के सात अंगों का वर्णन

स्वामी (राजा)	=	सिर
अमात्य (मंत्री)	=	आँख
जनपद (भू-भाग)	=	जंघा
दुर्ग (किला)	=	बाँह
कोष (धन)	=	मुख
दण्ड (सेना)	=	मस्तिष्क
मित्र	=	कान



राजनैतिक इतिहास

मेगस्थनीज

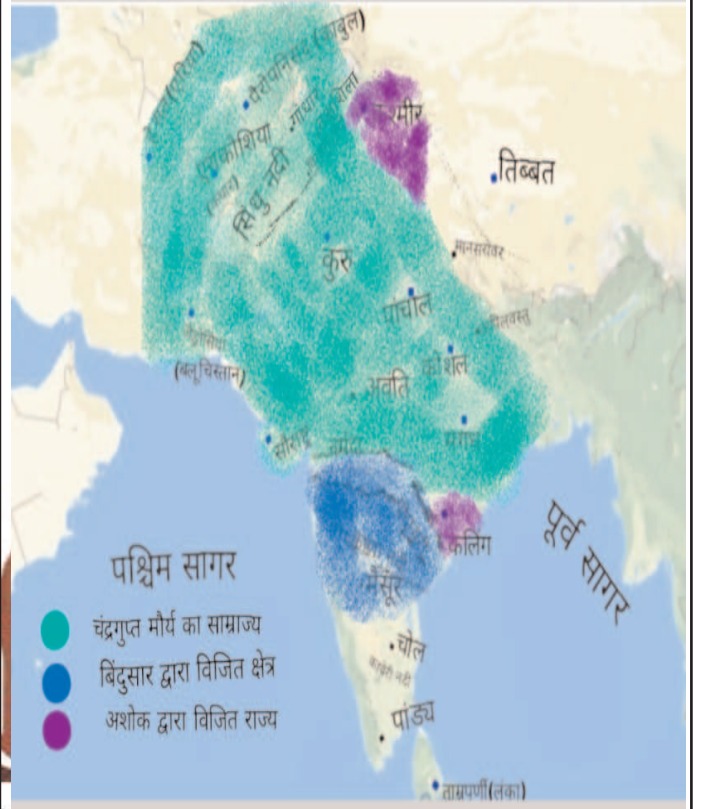
चंद्रगुप्त मौर्य : (322-298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त एक स्वेच्छाचारी शासक था इसे भारत का प्रथम सम्राट कहा जाता है।
- 305 ई.पू. में चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी शासक सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को पराजित किया।
- संधि की शर्तें- चन्द्रगुप्त मौर्य को हेरात, कंधार, काबुल एवं बलूचिस्तान के प्रदेश प्राप्त हुए। चन्द्रगुप्त ने 500 हाथी सेल्यूकस को उपहार में दिए।
- सेल्यूकस की पुत्री हेलेना (कानैलिया) का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से हुआ।
- सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को अपना दूत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा जहाँ उसने इण्डिका की रचना की।
- इसके शासनकाल में ही, स्थूलभद्र के नेतृत्व में पाटलीपुत्र में प्रथम जैन संगीति का आयोजन किया गया था।
- जीवन के अंतिम समय में चन्द्रगुप्त मौर्य जैन सन्यासी भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर, कर्नाटक) चला गया, जहाँ उसने चन्द्रगिरि पर्वत पर चन्द्रगुप्त सल्लेखना पद्धति द्वारा अपने प्राणों का त्याग किया।

- सेल्यूकस निकेटर का राजदूत मेगस्थनीज सात वर्षों तक चन्द्रगुप्त के दरबार में रहा। जिसने इण्डिका की रचना की।
- पाटलिपुत्र को पोलिमब्रोथा कहा है।
- इसके अनुसार भारतीय समाज सात वर्गों में विभाजित था- कृषक, शिकारी, मंत्री, दार्शनिक, निरीक्षक, व्यापारी एवं योद्धा।
- भारतीय शिव (डायोनिसियस) एवं कृष्ण (हेराक्लीज) की पूजा करते थे।
- पाटलीपुत्र का प्रशासन छः समितियों (प्रत्येक में पाँच सदस्य) द्वारा संचालित होता था। मेगस्थनीज ने कौटिल्य का वर्णन नहीं किया है।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र बिन्दुसार (अमित्रघात/भद्रसौर, अमित्रचेट्स, सिंहसेन) अर्थ- शत्रुओं का नाश करने वाला।
- अनुयायी-आजीवक सम्प्रदाय।
- दिव्यावदान- इसके शासनकाल में तक्षशिला में दो विद्रोह हुए जिसे शांत कराने के लिए अशोक व सुसीम को भेजा।
- इसके दरबार में सीरियाई शासक एण्टियोकस-प्रथम ने डायमेकस को भेजा।



अशोक (273 ई.पू. - 232 ई.पू.)

बिन्दुसार का पुत्र व उत्तराधिकारी

राज्याभिषेक- 269 ई.

उज्जैन का राज्यपाल था।

बौद्धग्रंथानुसार (महावंश)

99 भाइयों की हत्या कर गद्दी पर बैठा

भाब्रू अभिलेख (देवनाम प्रियदसी), मास्की, गुर्जरा, नेट्टूर, उदगोलाम अभिलेख में अशोक नाम मिलता है

मास्की अभिलेख

अशोक ने स्वयं के लिए बुद्ध शाक्य नाम का प्रयोग किया

कलिंग विजय
(वर्तमान उड़ीसा)

- 261 ई.पू.
- राज्याभिषेक के 8 वर्ष बाद (9वें वर्ष)
- उल्लेख- 13वें शिलालेख
- डॉ. हेमचंद्र राय चौधरी - अशोक का प्रथम व आखिरी युद्ध
- युद्ध की नीति सदा के लिए त्याग

- अशोक का धम्म: अशोक पहले ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। कल्हण की राजतरंगिणी व शैव उपासक था।
- बौद्ध धर्म की दीक्षा उपगुप्त से प्राप्त की।
- धम्म प्रचार 10वें वर्ष बोध गया, 12वें वर्ष निगालि सागर, 20वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की।
- भाब्रू अभिलेख: त्रिरत्न-बुद्ध धम्म व संघ के प्रति आस्था प्रकट की।
- धम्म प्रचार: महेन्द्र व संघमित्रा-श्रीलंका, महारक्षित-यूनान, महाधर्मरक्षित-महाराष्ट्र।
- अशोक ने आजीविकों के रहने के लिए बराबर की पहाड़ियों में गुफाओं का निर्माण भी करवाया।
- अशोक के शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।
- यूरोपियन लेखक अशोक की तुलना रोमन सम्राट कान्स्टेनटाइन से करते हैं।

दशरथ (बंधुपालित) 232-224 ई.पू.)

- दशरथ सम्राट अशोक का पौत्र था।
- गया (बिहार में स्थित नागार्जुन पहाड़ी पर आजीविकों के निवास के लिए तीन गुफाएं बनाई गईं।
- इसने अशोक की भांति देवानांप्रिय की उपाधि ग्रहण की।

अन्य शासक

- सम्प्रति (224-215 ई.पू.)- शालिशुक (215-202 ई.पू.), देववर्मन (202-195 ई.पू.), शतधन्ववा (195-187 ई.पू.)

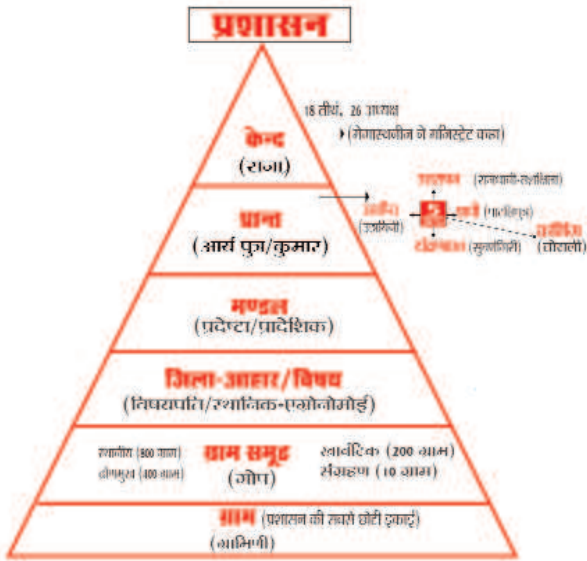
बृहद्रथ (187-184 ई.पू.)

- यह अंतिम मौर्य शासक था
- इसकी हत्या एक ब्राह्मण मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी और नव वंश, शुंग वंश की स्थापना की।

मौर्य प्रशासन

राजनीतिक व्यवस्था

- यह भारत की प्रथम केन्द्रीय राजतन्त्रात्मक व्यवस्था थी। जिसमें राजा सर्वोपरि होता था।
- अर्थशास्त्र में सप्तांग सिद्धांत के अन्तर्गत **राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, सेना एवं मित्र** शामिल थे।
- शीर्षस्थ अधिकारी तीर्थ या महामात्र कहलाते थे। अर्थशास्त्र के अनुसार इनकी संख्या 18 है। उन्हें 48000 पण वेतन के रूप में मिलते थे। (पण-3/4 तोलो के बराबर चाँदी का सिक्का)



18 तीर्थ	विभाग
मंत्री/पुरोहित	प्रधानमंत्री/धर्माधिकारी
समाहर्ता	राजस्व विभाग (वित्त मंत्री)
युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
सन्निधाता	कोषाध्यक्ष
सेनापति	युद्धमंत्री
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश
व्यवहारिक/धर्मस्थ	दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश
नायक	सेना का संचालक
कर्मान्तिक	उद्योग धंधों का प्रधान निरीक्षक
मंत्रिपरिषदाध्यक्ष	मंत्री परिषद का अध्यक्ष
दंडपाल	सैन्य सामग्री का प्रबंधकर्ता
अन्तपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
दुर्गपाल	भीतरी दुर्गों का प्रबंधक
नागरक	नगर का सर्वोच्च अधिकारी
आटविक	वन विभाग का प्रधान
प्रशास्ता	राजकीय लिपिक
दौवारिक	राजमहलों की देखरेख
अंतर्विशिक	अंगरक्षक सेना का प्रधान

मौर्यकाल के प्रमुख अध्यक्ष

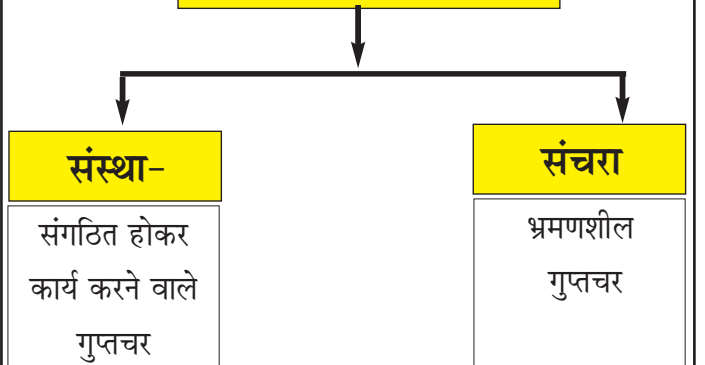
पण्याध्यक्ष	वाणिज्य व्यापार का अध्यक्ष
सीताध्यक्ष	कृषि विभाग का अधिकारी
अक्षपट्टलीक	महालेखाकार
रक्षिन	पुलिस अधिकारी
अकराध्यक्ष	खान विभाग
लक्षणाध्यक्ष	छापेखाना (मुद्राध्यक्ष)
विविताध्यक्ष	चारागाह का अध्यक्ष
पौतवाध्यक्ष	माप-तौल का अध्यक्ष
कुप्याध्यक्ष	वनों का अध्यक्ष
सूत्राध्यक्ष	कताई-बुनाई का अध्यक्ष
सूनाध्यक्ष	बूचड़ खाने का अध्यक्ष

नोट : प्रांत- चन्द्रगुप्त मौर्य के समय 4 प्रान्त थे, परन्तु अशोक के शासन में कलिंग विजय के बाद 5 प्रांत थे।

न्यायिक प्रशासन

- सर्वोच्च न्यायालय राजा का न्यायालय तथा सबसे नीचला न्यायालय, ग्राम न्यायालय होता था।
- दो प्रकार के न्यायालय थे
- (1) कण्टकशोधन (फौजदारी न्यायालय)- प्रमुख न्यायाधीश प्रदेष्टा
- (2) धर्मस्थीय (दीवानी न्यायालय) - प्रमुख न्यायाधीश धर्मस्थ/व्यवहारिक
- रज्जुक- अशोक द्वारा राज्याभिषेक के 26वें वर्ष न्यायिक अधिकार प्रदान किया गया।
- कठोर दण्ड व्यवस्था-मृत्युदण्ड, अंग विच्छेद, कारावास जुर्माना जैसे दण्ड प्रचलित थे।

गुप्तचर व्यवस्था



- अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गूढ़पुरुष कहा गया है।
- प्रमुख अधिकारी- सर्पमहामात्य।
- उभयवेतन- अन्य देशों में नौकरी करने वाले गुप्तचर

सेना

- यूनानी लेखक **प्लूटार्क** के अनुसार चन्द्रगुप्त की सेना में 6 लाख सेना थी।
- **मेगास्थनीज**- सैनिक प्रशासन 6 समितियों में विभक्त थी। 5-5 सदस्यों की 30 सदस्यियों की एक परिषद थी।

सेना की छह समितियाँ

समिति	कार्य विभाग
प्रथम	जल सेना
द्वितीय	यातायात एवं रसद की व्यवस्था
तृतीय	पैदल सेना की व्यवस्था
चतुर्थ	अश्व सेना की देख-रेख
पंचम	गज-सेना की देख रेख
षष्ठम	रथ सेना की व्यवस्था

सामाजिक जीवन

- वर्ण व्यवस्था का आधार **जन्म** था
- मेगस्थनीज- भारतीय समाज को **सात जातियों** में विभक्त बताया। (1. दार्शनिक, 2. किसान, 3. अहीर, 4. शिल्पी, 5. सैनिक, 6. गुप्ततर, 7. शासक वर्ग)
- मेगस्थनीज- भारत में दास नहीं थे जबकि **कौटिल्य** ने 9 प्रकार के दासों का वर्णन किया है। जिन्हें **कृषि के कार्य** में लगाया जाता था।
- कौटिल्य के अनुसार **15 वर्ण संकर जातियाँ** थीं, जो अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न हुए थे।
- **अनुलोम विवाह** : इसमें पुरुष उच्च वर्ण की एवं महिला निम्न वर्ण की होती है।
- **प्रतिलोम विवाह** : पुरुष निम्न वर्ण एवं कन्या उच्च वर्ण की होती है।
- **नियोग प्रथा** : स्त्री का अपने देवर के साथ रहना।

स्त्रियों की दशा

- स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा वर्जित थी।
- **अनिष्कासिनी** : वह स्त्री जो घर के बाहर नहीं निकलती थी।
- **गणिका** : वेश्या को कहा जाता था। निरीक्षक गणिकाध्यक्ष कहलाता था।
- **रूपजीवा** : स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति अपनाने वाली महिला।
- **सती प्रथा के स्पष्ट साक्ष्य नहीं (अर्थशास्त्र)**

- **शिक्षा** : वर्णाश्रम धर्म के अनुसार, **प्रमुख केन्द्र**- तक्षशिला उज्जैन, वाराणासी।

आर्थिक स्थिति

- **अर्थव्यवस्था**: कृषि+पशुपालन+व्यापार-वाणिज्य = वाता पर आधारित थी।
- **कृषि** : धान सबसे उत्तम फसल व गन्ना सबसे निम्न स्तर की फसल थी।
- **अदेवमातृका**- अर्थशास्त्र में **अच्छी मिट्टी** को अदेवमातृका कहा गया है।
- अर्थशास्त्र के अनुसार **दो प्रकार** की भूमि थी
(1) राजकीय भूमि -व्यवस्था **सीताध्यक्ष** द्वारा, आय - **सीता**
(2) निजी स्वामित्व की भूमि -भूस्वामी (**क्षेत्रक**), उपवास (**कश्तकार**) कहा जाता था।
- **भूमि कर** 1/4 से 1/6 भाग लिया जाता था।
- **सेतुबंध** : राजकीय की ओर से सिंचाई व्यवस्था
- **व्यापार** : प्रमुख अधिकारी- संस्थाध्यक्ष
- **बंदरगाह**: पूर्वी तट- ताम्रलिपि बंदरगाह। पश्चिमी तट- भड़ौच बंदरगाह

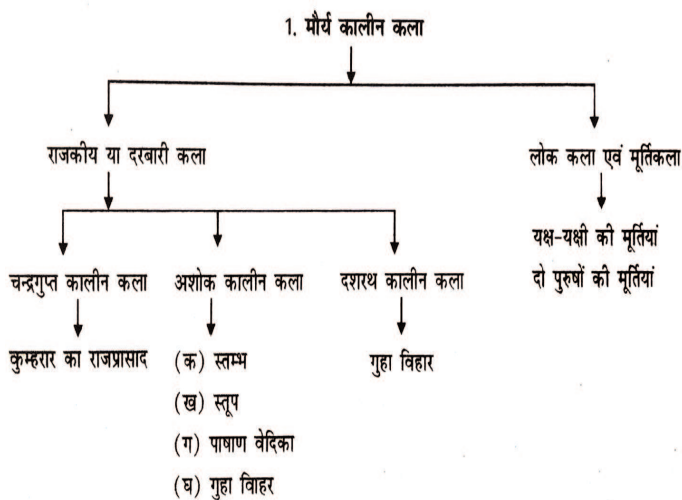
प्रमुख कर	विषय
प्रणय	संकटकाल में राजा द्वारा प्रजा से
विष्टि	निशुल्क श्रम हेतु
उत्संग	प्रजा द्वारा राजा को उपहार
विवीत	चारागाहों पर कर
हिरण्य	नगद कर
बलि	धार्मिक कर
निष्क्राम्य	निर्यात कर
प्रवेश्य	आयात कर
अभ्यांतर	राजधानी में लिया जाने वाला कर
आधित्य	विदेशी माल पर कर
बाह्य	स्वदेशी वस्तुओं पर कर

उद्योग

- **प्रधान उद्योग**- सूत कातना एवं बुनाई करना।
- **श्रेणी**- शिल्पियों का संगठन।
- **महाश्रेष्ठि**- श्रेणी न्यायालयों का प्रधान।
- **सार्थवाह**- कारवाँ व्यापारियों का प्रमुख अधिकारी।
- **निगम**- व्यापारियों का संगठन।
- **संघ**- देनदारों महाजनों का संगठन।

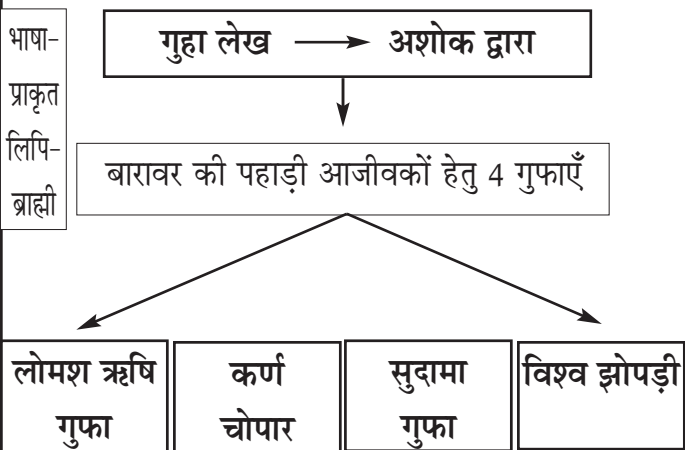
सिक्के	
नाम	धातु
निष्क/ सुवर्ण	सुवर्ण- सोने के सिक्के
कार्षापण, पर्ण, धारण	चाँदी के सिक्के
माषक एवं काकणि	ताँबे के सिक्के

- मेगास्थनीज के अनुसार बिक्री कर के रूप में मूल्य का 10वां भाग लिया जाता था तथा इसे ना देने वाले नगरिकों को मृत्युदंड दिया जाता था।
- ब्याज को रूपिका एवं परीक्षण कहा जाता था।



कला और वास्तुकला

- अशोक ने कई नगरों की स्थापना की जिनमें श्रीनगर (कश्मीर) एवं ललित पाटन (नेपाल) प्रमुख हैं।
- राजाप्रासाद- चन्द्रगुप्त मौर्य का राजाप्रासाद (महल) लकड़ी का बना था। कुम्हार (पटना) में 80 स्तम्भ वाले राजाप्रासाद के अवशेष मिले हैं। फाह्यान ने देवताओं द्वारा निर्मित कहा।
- दीदारगंज (पटना के निकट) से प्राप्त यक्षिणी की मूर्ति, मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।



अशोक के स्तम्भ लेख

- अशोक के स्तम्भ एकात्मक (monolithic) हैं। (संख्या 7) अर्थात् ये एक ही पत्थर से तराश कर बनाए गए हैं। इनके निर्माण में चुनार के बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ।

दीर्घ स्तम्भ लेख

स्तम्भ लेख	स्थान व विशेष
दिल्ली टोपरा	तुगलक शासक फिरोजशाह द्वारा उत्तर प्रदेश से दिल्ली में लाया गया। अशोक के सातों अभिलेख उत्कीर्ण हैं।
दिल्ली मेरठ	फिरोजशाह द्वारा मेरठ से दिल्ली लाया गया।
लौरिया अरराज	बिहार के चम्पारण जिले में।
लौरिया नन्दनगढ़	मोर का चित्र बिहार के चम्पारण में
रामपुरवा	चम्पारण, बिहार
प्रयाग	अकबर द्वारा कौशाम्बी से इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) लाया गया।

लघु स्तम्भ लेख

स्तम्भ लेख	स्थान व विशेष
साँची	रायसेन जिला (मध्यप्रदेश)
सारनाथ	वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
कौशाम्बी	इलाहाबाद
रुम्मिनदेई	नेपाल के तराई में
निगालिसागर	नेपाल के तराई में

- इन पॉलिशदार स्तम्भों के केवल शीर्ष भाग को जोड़ा गया है, जिनमें सिंह एवं साँड विलक्षण वास्तुशिल्प के प्रमाण हैं।



सारनाथ स्तम्भ लेख

- सारनाथ के स्तम्भ का सिंह उत्कृष्ट स्तम्भ शीर्षों में से एक है।
- इन स्तम्भों का निर्माण धम्म के प्रचार के लिए किया गया था।
- लौरिया-नंदनगढ़ एवं रामपुरवा अशोक स्तम्भ का वृषभशीर्ष भी वास्तु शिल्प के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।



लौरिया-नंदनगढ़ स्तम्भ लेख

स्तूप

- स्तूपों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। स्तूपों का निर्माण ईंट से किया जाता था।

1. साँची का स्तूप - (रायसेन, मध्यप्रदेश)

अशोक अपने महामात्रों के

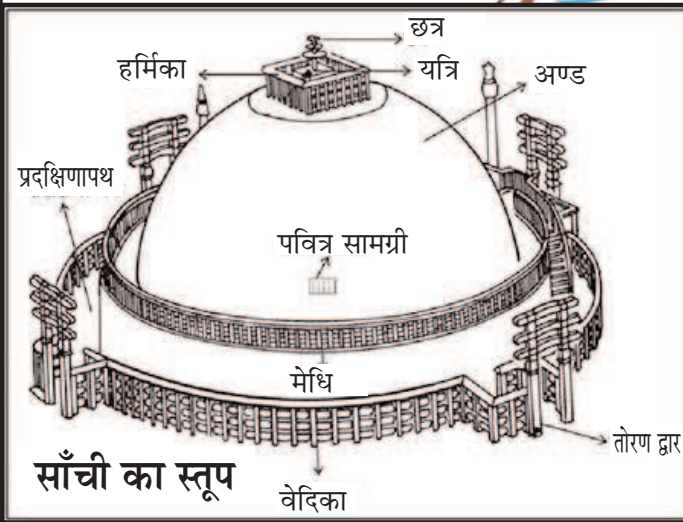
संघ भेद रोकने का आदेश देता है। यहां तीन स्तूप हैं।

प्रथम - भगवान बुद्ध

द्वितीय - शिष्य सारिपुत्र

तृतीय - शिष्य महामोद्गलायन

- वर्ष 1989 में इसे यूनेस्को के विश्व धरोहर में शामिल किया गया।
- वर्ष 2008 से यहां बौद्ध शिक्षा प्रदान की जाती है।
- शुंगकाल में पुष्यमित्रशुंग द्वारा पाषाण की वेदिका बनवाई गई।



मौर्यकाल के विशिष्ट तथ्य

- मयूर- मौर्य वंश का राजकीय चिन्ह था।
- पालि- मौर्यकाल में आम जनता की भाषा थी।
- तक्षशिला- मौर्यकाल में उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था।
- मोगालिपुत्र तिस्स ने कथावस्तु की रचना की थी।
- नन्दवंश के विनाश में चन्द्रगुप्त ने कश्मीर के राजा पर्वतक से

- 2. भरहुत स्तूप (सतना, मध्य प्रदेश) - निर्माण पुष्यमित्र शुंग द्वारा संभवतः 185 ई.पू.

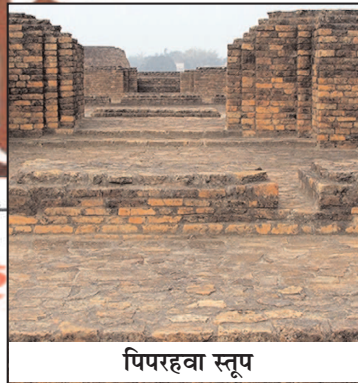
- 3. खोज 1873 में एलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा।

3. धर्मराजिका स्तूप , सारनाथ

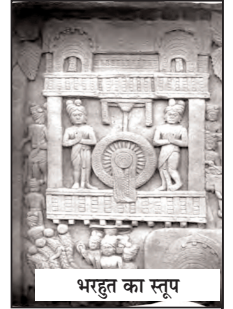
- निर्माण अशोक ने करवाया था।

- धमेख स्तूप भी कहते हैं।

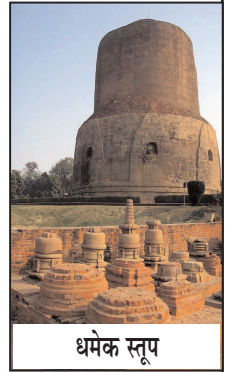
- 4. पिपरहवा स्तूप : नेपाल की तराई में स्थित, सर्वाधिक प्राचीन



पिपरहवा स्तूप



भरहुत का स्तूप



धमेक स्तूप

इंस्टीट्यूट

सहायता प्राप्त की थी।

- अशोक ने तक्षशिला में विद्रोह के दमन के लिए कुणाल को भेजा था।
- अशोक के समय बुद्ध की मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं मिलता है।

□ नोट:

हर्षचरित्र (बाणभट्ट) के अनुसार मौर्यवंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या करने के बाद पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में शुंग वंश की स्थापना की।

मौर्योत्तरकाल

भारतीय शासक

शुंग

(187-75 ई.पू.)

कण्व

(75-30 ई.पू.)

आंध्र सातवाहन

(30 ई.पू.-250 ई.)

वाकटक

(255 ई.)



विदेशी शासक

इण्डोग्रीक

(190 ई.पू.)

शक / शिथियन

(90 ई.पू.)

पहलव / पार्थियन

(प्रथम सदी ई.पू.)

कुषाण

(15 ई.पू.)

शुंग वंश (187-75 ई.पू.)

- संस्थापक- पुष्यमित्र शुंग।
- राजधानी- विदिशा।
- पुष्यमित्र के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना यवनों का भारत पर आक्रमण था।
- यवन विजय के उपलक्ष्य में पुष्यमित्र ने 2 अश्वमेध यज्ञ कराए।
- कालीदास कृत मालविकाग्निमित्रम् के अनुसार पुष्यमित्र शुंग का पौत्र (अग्निमित्र का पुत्र) वसुमित्र ने यवनों को परास्त किया।
- पुष्यमित्र के पुरोहित पंतजलि ने पाणिनी के अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना की थी।
- पुष्यमित्र ने ही साँची के स्तूप की पाषाण की वेदिका का निर्माण करवाया। शुंग काल के अन्य महत्वपूर्ण स्तूप हैं भरहुत, बेसनगर तथा बौधगया।

- शुंगकाल में संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मण व्यवस्था का पुनरुत्थान हुआ। इसी काल में पहला स्मृति ग्रंथ मनुस्मृति की रचना की गई।
- अंतिम शासक- देवभूति था। इसकी हत्या 73 ई. पू. में उसके अमात्य वासुदेव ने कर दी तथा कण्व राजवंश की स्थापना की।

कण्व वंश (75-30 ई.पू.)

- संस्थापक- वासुदेव।
- शासक- वाशुदेव-भूमिमित्र-नारायण-सुशर्मन।
- अंतिम शासक-सुशर्मन था जिसकी हत्या सातवाहन नरेश सिमुक ने कर दी और सातवाहन वंश की स्थापना की।

सातवाहन वंश (30 - 250 ई.पू.)

- संस्थापक- सिमुक था,
- राजधानी- गोदावरी के तट पर प्रतिष्ठान (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) थी।

प्रमुख शासक

शातकर्णी- (27 ई.पू.- 17 ई.पू.)

- दो अश्वमेध यज्ञ तथा एक राजसूय यज्ञ संपन्न कराए।
- चाँदी के सिक्कों पर अश्व की आकृति अंकित कराई।
- शातकर्णी- प्रथम ने दक्षिणापथ का स्वामी की उपाधि धारण की थी।
- नानाघाट शिलालेख में शतकर्णी-प्रथम की उपलब्धियों तथा भूमि अनुदान का पहला अभिलेखीय साक्ष्य।

हाल- प्रथम (20 ई. 24 ई.)

- प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती (गाथाहासतसई) की रचना की, जिसमें 700 श्लोक हैं।
- हाल के दरबार में ही गुणाढ्य निवास करते थे जिन्होंने वहतकथाकोश की रचना की थी

गौतमीपुत्र शातकर्णी -प्रथम (106 -130 ई.)

- उपाधि- एकमात्र ब्राह्मण, अद्वितीय ब्राह्मण,
- क्षरात वंश के शासक नहपान की हत्या की।
- नासिक अभिलेख में गौतमीपुत्र शातकर्णी की विजय का उल्लेख है।

यज्ञश्री शातकर्णी- (165 ई.-194 ई.)

- यह सातवाहन वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था, जिसके सिक्कों पर मछली, शंख और जहाज अंकित हैं।
- सातवाहन वंश का अंतिम शासक पुलवामी चतुर्थ था।

विविध तथ्य

- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी जो कि ब्राह्मी लिपि में थी।
- सातवाहन काल में चाँदी व ताँबे के सिक्कों का प्रयोग होता था, जिसे कार्षापण कहा जाता था।
- सातवाहनों ने आर्थिक लेन देन के लिए सीसे के सिक्कों का भी प्रयोग किया।
- सातवाहनों में मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था थी।

वाकटकवंश

- संस्थापक- विन्ध्य शक्ति (255-275 ई.)।
- राजधानी- नन्दिवर्धन (नागपुर)।
- प्रवरसेन प्रथम- चार अश्वमेध यज्ञ।

- प्रवरसेन द्वितीय-प्राकृत भाषा में सेतुबंध नामक पुस्तक की रचना।
- अजंता की गुफा 9वीं एवं 10वीं वाकटकों से संबंधित है।

अन्य वंश

- आभीर वंश- संस्थापक ईश्वर सेन,
- इक्ष्वाकु वंश- संस्थापक श्री शान्तमूल, नागार्जुनीकोण्डा स्तूप- निर्माण वीरपुरुषदत्त द्वारा
- कदम्ब वंश - संस्थापक- मयूरशर्मन
राजधानी- वनवासी
- चेदिवंश - संस्थापक- महामेधवाहन। शासक खारवेल
स्रोत- हाथीगुम्फा अभिलेख।

अन्य तथ्य

- मौयोत्तरकाल की सबसे बड़ी विशेषता संकरजातियों में वृद्धि हुई।
- इण्डोग्रीक शासकों ने सर्वप्रथम द्विभाषीय लेख युक्त स्वर्ण सिक्के चलाए।
- प्लिनी (नेचुरल हिस्टोरिका) ने रोम से सारा सोना भारत पहुंचने पर दुःख व्यक्त किया है।
- ज्योग्राफी- टॉल्मी द्वारा लिखित
- मानसून की खोज- हिप्पालस नामक ग्रीक नागरिक द्वारा

मौयोत्तरकालीन प्रमुख बंदरगाह :

- वर्णन पेरीप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी में।
- 1. भड़ौच / बैरीगाजा- गुजरात में स्थित।
- 2. आरिकामेडु- पाण्डिचेरी में स्थित, एक रोमन बस्ती मिली।
- 3. कोरकई- तमिलनाडु में स्थित, पाण्ड्यों की राजधानी थी।
- 4. मुजरिस- केरल में स्थित, चेरों की राजधानी थी।

साहित्य	लेखक
1. नाट्य शास्त्र	भरतमुनि
2. महाभाष्य	पतंजलि
3. कामसूत्र	वात्स्यायन
4. बुद्धचरित्र एवं सौंदरानंद	अश्वघोष
5. स्वप्नवासवदत्ता	भास

पश्चिमोत्तर भारत में मौर्यों के स्थान पर मध्य एशिया(बैक्ट्रिया) से आए कई राजवंशों ने अपनी सत्ता कायम की। इस काल में भारतीय क्षेत्रों पर यूनानी, शक, पहलव तथा कुषाणों का हमला हुआ।

1. हिन्द यूनानी / इण्डोग्रीक (190 ई.पू.)

डेमेट्रियस वंश

संस्थापक- डेमेट्रियस-I
राजधानी- साकल
मिनाण्डर- (165-145 ई.पू.)
अन्य नाम- मिलिन्द
सिक्के- बालाघाट, भड़ौच
रचना- मिलिन्दपन्हो (बौद्धभिक्षु नागसेन व मिनाण्डर के मध्यवार्ता का वर्णन)

यूक्रेटाइडस वंश

संस्थापक- यूक्रेटाइडस
राजधानी- तक्षशिला
शासक- एंटियालकिडास
राजदूत- हेलियोडोरस (शुंग शासक भागभद्र के दरबार) विदिशा आया जिसने भागवत धर्म ग्रहण किया व गरुड़ स्तंभ स्थापित किया।

- सबसे पहले भारत में सोने के सिक्के हिन्द-यूनानियों ने जारी किए थे।
- ज्योतिषि एवं पर्दा प्रथा की शुरुआत इन्हीं के द्वारा की गई।
- हिन्द-यूनानी शासकों ने भारत के पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में यूनान की कला चलाई जिसे हेलेनिस्टिक आर्ट कहते हैं। भारत में गांधार कला इसका उत्तर उदाहरण है।

2. शक /सीथियन (90 ई.पू.)

- शकों की पाँच शाखाएँ थीं, और हर शाखा की राजधानी भारत और अफगानिस्तान में अलग-अलग भाग में थी।

शक

अफगानिस्तान

मथुरा

पश्चिम भारत

पंजाब (राजधानी तक्षशिला)

ऊपरी दक्कन

उज्जैन / मालवा के शक

- प्रथम शासक- चष्टन
- 57-78 ई.पू. में उज्जैन के एक राजा ने शकों को युद्ध में पराजित कर उन्हें बाहर खदेड़ दिया और विक्रमादित्य की उपाधि ग्रहण की। विक्रम संवत् नाम का संवत् 57 ई. पू. में शकों पर उसकी विजय से आरंभ हुआ।
- भारतीय इतिहास में अब तक कुल 145 विक्रमादित्य हुए। गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त- द्वितीय सबसे विख्यात विक्रमादित्य था।

रुद्रदामन प्रथम (130-150 ई.)

- राजधानी- आधुनिक सियालकोट (शाकल)।
- इसने काठियावाड़ के अर्द्धशुष्क क्षेत्र की सुदर्शन झील (मौर्य काल में निर्मित) का जीर्णोद्धार किया।
- इसके द्वारा रचित जूनागढ़ अभिलेख विशुद्ध संस्कृत भाषा में पहला लंबा अभिलेख है। इसकी लिपि ब्राह्मी
- क्षत्रप- शक नरेशों के भारतीय प्रदेशों के शासक क्षत्रप कहे जाते थे।
- रुद्रसिंह-तृतीय -मालवा के शकों में अंतिम शक शासक जिसकी हत्या चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने की व व्याघ्र शैली में चाँदी के सिक्के चलवाए।

3. पहलव या पार्थियाई(प्रथम सदी ई.पू.)

- पश्चिमोत्तर भारत में शकों के बाद पहलवों का आधिपत्य हुआ।
- प्रथम शासक- मिथ्रेडेत्स (171 - 130 ई.पू.)
- मूल स्थान- ईरान था, जहाँ से वे भारत आए।
- सबसे प्रसिद्ध पार्थियाई राजा हुआ गोण्डोफर्निस (20-41 ई.)। उसी के शासन काल पहली सदी ई. में संत थॉमस ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भारत आया था।
- उसके शासनकाल का एक अभिलेख तख्तेबही पेशावर से प्राप्त हुआ है।

4. कुषाण (15 ई.)

- पार्थियाइयों के बाद कुषाण आए, जो यूची और तोखारी भी कहलाते थे।
- राजधानी- पुरुषपुर या पेशावर थी।

कुजुल कडफिसेस (15-65 ई.)

- यह भारत में कुषाण वंश का संस्थापक था।
- इसने ताँबे के सिक्के जारी किए।

विम कडफिसेस (65- 78 ई.)

- कुषाण वंश का वास्तविक संस्थापक जिसने सबसे शुद्ध स्वर्ण सिक्के जारी किए।
- सिक्कों पर शिव, नंदी और त्रिशूल की आकृतियाँ बनी हैं, इसने महेश्वर की उपाधि धारण की।

कनिष्क (78-105 ई.)

- कुषाण राजवंश का सबसे महान शासक कनिष्क था।
- कनिष्क ने 78 ई. में शक संवत् चलाया जो उसके राज्यारोहण की तिथि है। शक संवत् भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
- उसकी दो राजधानियाँ थीं पुरुषपुर (पेशावर) तथा मथुरा।
- इसने बौद्ध धर्म का संपोषण एवं संरक्षण किया।
- चौथी बौद्ध संगीति कनिष्क के शासनकाल में कुण्डलवन (कश्मीर) में वसुमित्र की अध्यक्षता में हुई।
- अश्वघोष- कनिष्क का राजकवि था। उसने सौन्दरानन्द, बुद्धचरित्र एवं सारिपुत्र प्रकरण की रचना की।
- चरक- कनिष्क के राजवैद्य थे जिन्होंने चरक संहिता की रचना की।
- भारत का व्यापारिक संबंध मध्य एशिया एवं पश्चिमी विश्व रेशम मार्ग के द्वारा।

- इसके शासन काल में कला की दो स्वतंत्र मूर्तिकला शैलियों का विकास हुआ (1) गांधार शैली, (2) मथुरा कला शैली।
- कनिष्क के समय से ही भारत में मूर्ति पूजा प्रारंभ हो गई।
- इसने पुरुषपुर में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया। इसी के पास एक विशाल संघाराम (कनिष्क चैत्य) का निर्माण यवन वास्तुकार अगिलस द्वारा करवाया गया।
- कनिष्क की राजसभा में नव ग्रहों (विद्वानों का निवास था।
- प्रमुख विद्वान - पार्श्व, वसुमित्र, नागार्जुन, अश्वघोष (चारों बौद्ध दार्शनिक) तथा चरक।
- कनिष्क का पुरोहित संघरक्ष था।

कुषाणवंश के अन्य उत्तराधिकारी

- वशिष्क (102-106 ई.)
- हुविष्क (106-140 ई.)
- कनिष्क-द्वितीय-वासुदेव प्रथम-कनिष्क तृतीय
- वासुदेव द्वितीय- कुषाण वंश का अंतिम शासक।

अन्य तथ्य -

- वसुमित्र- महाविभाषशास्त्र इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसे बौद्ध धर्म का विश्वकोष भी कहा जाता है।
- नागार्जुन- इनकी तुलना मार्टिन लूथर से की गई है। इन्होंने सांपेक्षता के सिद्धांत, शून्यवाद का प्रतिपादन किया था, इसलिए इन्हें भारत का आइंस्टीन भी कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध कृति माध्यमिक सूत्र एवं प्रज्ञापारमिता है।

□ नोट:

मौर्यकाल के पतनोपरान्त, दीर्घ काल तक भारत वर्ष एक शासन के अंतर्गत नहीं आ सका। इस कमी को गुप्त शासकों ने पूरा किया और लगभग संपूर्ण भारत को एक राजनीतिक क्षेत्र के अधीन कर आर्थिक, सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग भी कहा जाता है।

गुप्त वंश से संबंधित जानकारी विभिन्न स्रोतों से मिलती है

साहित्यिक साक्ष्य

- देवीचंद्रगुप्तम् (विशाखदत्त)
- मृच्छकटिकम् (शूद्रक)
- कामसूत्र (वात्स्यायन)
- कालिदास-ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, मेघदूत
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्

विदेशी विवरण

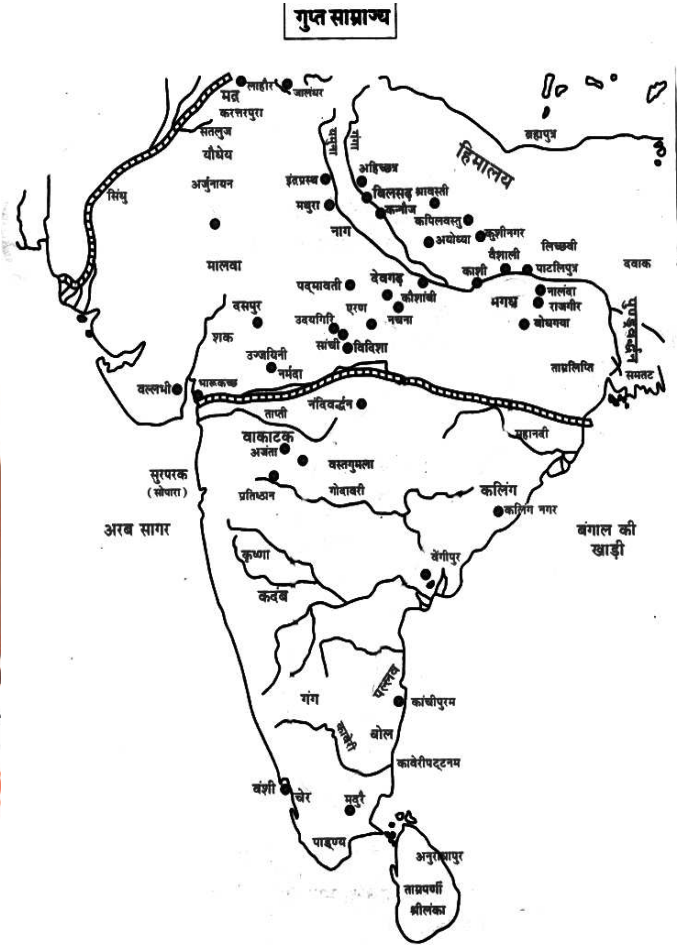
- फाह्यान रचना- (फो-क्यू-की)
- ह्वेनसांग रचना- (सी-यू-की)

पुरातात्विक साक्ष्य

- प्रयागप्रशस्ति अभिलेख (समुद्रगुप्त)
- जूनागढ़ अभिलेख
- भीतरी अभिलेख (स्कन्दगुप्त)
- मंदिर, स्मारक, सिक्के
- अजन्ता, बाघ की गुफा।

गुप्त शासकों द्वारा ग्रहण उपाधियाँ

शासक	उपाधियाँ
श्रीगुप्त	आदिराज, महाराज
घटोत्कच	महाराज
चन्द्रगुप्त प्रथम	महाराजाधिराज
समुद्रगुप्त	पराक्रमांक
चन्द्रगुप्त-द्वितीय	विक्रमादित्य
कुमारगुप्त	महेन्द्रदित्य, शक्रादित्य
स्कन्दगुप्त	क्रमादित्य



प्रारंभिक शासक

श्रीगुप्त (240-289 ई.)

- श्रीगुप्त वंश का संस्थापक था।
- प्रभावती गुप्ता के पूना ताम्र पत्राभिलेख में श्री गुप्त को आदिराज कहा गया है।

घटोत्कचगुप्त (280-319 ई.)

- यह श्रीगुप्त का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-334 ई.)

- गुप्तवंश का वास्तविक संस्थापक था।
- उसने लिच्छवी की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- अपने राज्यारोहण के स्मारक के रूप में- 319-320 ई. में गुप्त संवत् चलाया। सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी किए।

समुद्रगुप्त (335-380 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त ने गुप्त साम्राज्य का अपार विस्तार किया।

- जानकारी- हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तम्भ लेख) से प्राप्त होती है।
- हरिषेण शांति एवं युद्ध का मंत्री (संधि विग्रहक) था।
- श्रद्धपुर अभिलेख में समुद्रगुप्त को तात्यादपरिगृहीत कहा गया है जिसका अर्थ है- सौ युद्धों का विजेता।
- इतिहासकार विसेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत के नेपोलियन की उपाधि दी।

विजय अभियान :-

- ❖ आर्यावर्त की विजय- 9 राज्यों को विजित कर प्रसभोद्धरण (साम्राज्य में मिला लिया) की नीति अपनाई।
- ❖ दक्षिणापथ की विजय- 12 राजाओं को परास्तकर ग्रहणमोक्षानुग्रह (राज्य वापस कर दिये) तथा धर्म विजयी का कार्य किया।
- ❖ आटविक राज्यों की विजय- सभी राजाओं (अटविक) को परिचारक (सेवक) बनाया।
- ❖ सीमावर्ती राज्यों की विजय- राजाओं को कर देने के लिए बाध्य किया (सर्वकरदानाज्ञाकरणप्राणामागमन की नीति)।
- ❖ विदेशी राज्यों की विजय- स्वयं की सेवा व अपनी कन्याओं का दान देने हेतु बाध्य करने की नीति अपनाई।
- एरण अभिलेख में समुद्रगुप्त की पत्नी का नाम दत्तदेवी वर्णित है।
- समुद्रगुप्त को कविराज (कई कविताओं का रचयिता) भी कहा गया है।
- समुद्रगुप्त को कई सिक्कों पर वीणा वादन करते हुए दर्शाया गया है।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त से गया में बुद्ध मंदिर बनाने की अनुमति मांगने के लिए एक दूत भेजा और अनुमति प्राप्त की।
- उसके काल की छः प्रकार की स्वर्ण मुद्राएं मिली हैं। गरुड़, अश्वमेध, धनुर्धर, व्याधहंता, परसु एवं वीणासारण।
- समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर काँच नाम उत्कीर्ण है।
- इसके दरबार में बौद्ध विद्वान वसुबंधु रहते थे।

रामगुप्त

- समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद, रामगुप्त शासक बना जो एक कमजोर राजा था।

- विशाखादत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् के अनुसार रामगुप्त शकों के साथ युद्ध में बुरी तरह पराजित हुआ।
- शक राजा उसकी पत्नी ध्रुवदेवी को प्राप्त करना चाहता था। रामगुप्त ने अपनी पत्नी को शक शासक को देने का फैसला किया। लेकिन चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य- (रामगुप्त का छोटा भाई) को यह बात पसंद नहीं आई और उसने स्त्री वेश धारण करके शक राजा का वध कर दिया। बाद में उसने रामगुप्त की भी हत्या कर डाली और गुप्त वंश की गद्दी पर बैठा
- राजशेखर की काव्य-मीमांसा ने भी इस घटना का उल्लेख किया गया है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (380-412 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त एवं दत्तदेवी का पुत्र था।
- उसके शासन काल में गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर पहुँचा।
- इसे साँची के अभिलेख में देवराज एवं प्रवरसेन के अभिलेख में देवगुप्त कहा गया है।
- मेहरौली स्तम्भ लेख में राजा चन्द्र का वर्णन है, जिसकी पहचान चन्द्रगुप्त द्वितीय से की गई है।

वैवाहिक संबंध-

- ❖ वाकटक वंश- अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय से करवाया।
- वाकाटक की सहायता से चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को पराजित किया। इस उपलक्ष्य में उसने चाँदी के व्याघ्र नामक सिक्के चलाए।
- इस विजय के बाद उसे शाकारी कहा गया और उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त-द्वितीय के उदयगिरि अभिलेख के अनुसार उसका उद्देश्य संपूर्ण पृथ्वी को जीतना था।
- राजधानी पाटलिपुत्र थी। उसने उज्जैन में दूसरी राजधानी स्थापित की जो कि कालिदास एवं अमर सिंह जैसे विद्वानों से विभूषित थी।
- चन्द्रगुप्त-द्वितीय वैष्णव था और उसने परमभागवत की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त-द्वितीय के समय ही चीनी बौद्धयात्री फाह्यान (399-414 ई.) भारत आया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के नौ रत्न

रत्न	क्षेत्र
कालिदास	साहित्यकार
अमरसिंह	शब्दकोष (अमरकोष)
शंकु	वास्तुकला
धन्वन्तरि	चिकित्सा
क्षपणक	ज्योतिष विज्ञान
वेताल भट्ट	जादू
वररुची	व्याकरण (संस्कृत)
घटकर्पर	शिल्पकार
वाराहमिहिर	ज्योतिष विज्ञान

कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.)

- मंदसौर अभिलेख से कुमारगुप्त-प्रथम के शासन का वर्णन प्राप्त होता है।
- तुमैन अभिलेख में कुमारगुप्त-प्रथम को शरदकालीन सूर्य कहा है।
- इसके द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई (बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया था)।
- सिक्के- कुमारगुप्त ने मयूर आकृति के सिक्के चलाए।

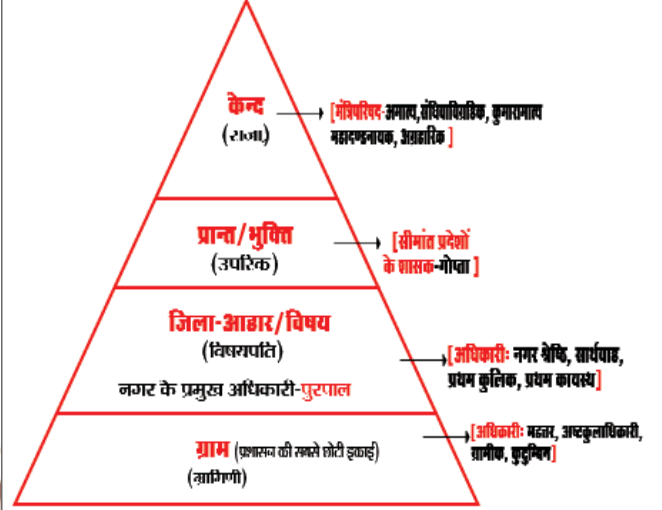
स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)

- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि गिरनार के प्रशासक चक्रपालित (पर्णदत्त का पुत्र) ने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया था।
- स्कन्दगुप्त का भित्तरी अभिलेख (गाजीपुर) हूणों द्वारा आक्रमण की जानकारी देता है।
- तोरमाण, मिहिरकुल प्रसिद्ध हूण राजा थे। कहौम स्तम्भलेख में स्कन्दगुप्त को शक्रोपम तथा जूनागढ़ अभिलेख में श्रीपरिक्षिप्तवृक्षा, मलेच्छ कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त ने प्रशासनिक सुविधा के उद्देश्य से राजधानी-अयोध्या को बनाई थी।
- इसने वृषभ शैली के सिक्के जारी किए।
- विष्णुगुप्त तृतीय, गुप्त वंश का अंतिम शासक था।

गुप्तकालीन प्रशासन पद्धति

- गुप्त साम्राज्य की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। राजपद वंशानुगत (करमदंडा अभिलेख) था। राजधानी पाटलिपुत्र थी।

प्रशासन



- नगरश्रेष्ठि-पूँजीगत वर्ग का नेता
- सार्ववाह- विषय के व्यापारियों का नेता
- प्रथम कुलिक- कारीगर समुदाय का प्रमुख
- प्रथम कायस्थ- लिपिकों का प्रधान
- पेठ- यह ग्राम समूह की इकाई थी। ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- ग्राम सभा को पंचमण्डली एवं ग्राम जनपद कहा जाता था।
- गोप्ता-यह देश का प्रशासक था जो सम्राट द्वारा सीधे नियुक्त किया जाता था।

गुप्त साम्राज्य के प्रमुख पदाधिकारी

सन्धिविग्रहक	संधि व युद्ध का मंत्री
कुमारामात्या	गुप्त साम्राज्य के सबसे बड़े अधिकारी
खाद्यत्पाकिका	राजकीय भोजनालय का अध्यक्ष
महादण्डनायक	न्यायाधीश
धुवाधिकरण	भूमिकर वसूलने वाला प्रमुख अधिकारी
उपरिक	प्रांत का राज्यपाल
कुमारामात्य	प्रशासनिक अधिकारी
दण्डपाशिक	पुलिस विभाग का प्रधान
महादण्डनायक	मुख्य न्यायाधीश
महाबलाधिकृत	सैन्य कोष का अधिकारी
महाप्रतिहार	मुख्य दौवारिक,
रणभंडागारिक	सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला
महाअक्षपटिलक	अभिलेख विभाग का प्रधान
विनयस्थिति स्थापक	शिक्षा अधिकारी
महासेनापति	सेना का सर्वोच्च अधिकारी

सैन्य संगठन

- **सम्राट**- यह सेना का अध्यक्ष होता था।
- **युवराज**- सम्राट के वृद्ध होने पर सेना की अध्यक्षता युवराज करता था।
- सेना कई शाखाओं में विभाजित थी-
- 1. **गज सेना**- इसका प्रधान अध्यक्ष **महापीलुपति** होता था।
- 2. **अश्व सेना**- इसका प्रधान अध्यक्ष **महाश्वपति** या **भटारश्वपति** होता था।

न्याय प्रशासन

स्रोत : नारद व बृहस्पति स्मृति से प्राप्त होती है।

- न्यायालय **4 वर्गों** में विभाजित था।

राजा का न्यायालय → पूग → श्रेणी → कुल

- इसी काल में **प्रथम बार दीवानी व फौजदारी कानून** भलीभांति परिभाषित तथा पृथक्कृत हुए।
- **फाह्यान** के अनुसार दण्डविधान अत्यंत कोमल थे तथा **मृत्युदण्ड** नहीं दिया जाता है।

सामाजिक जीवन

- समाज **चार वर्गों** में विभाजित था- **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र**।
- **कायस्थ** का सर्वप्रथम उल्लेख **याज्ञवल्क्य स्मृति** तथा गुप्तकालीन अभिलेखों से प्राप्त होता है।
- **शूद्रों** की स्थिति में सुधार आया। उन्हें रामायण, पुराण, महाभारत सुनने का अधिकार मिल गया।
- शूद्रों की पहचान मुख्यतः **कृषक** के रूप में भी होने लगी।
- समाज में **छूआ-छूत** प्रचलित था।
- स्त्रियों की दशा में थोड़ी **गिरावट** आई।
- बहु विवाह प्रचलित था। चन्द्रगुप्त-द्वितीय तथा कुमारगुप्त-प्रथम के अनेक पत्नियों का उल्लेख मिलता है।
- **अनुलोम विवाह**(ब्राह्मण पिता-शूद्र माता) के फलस्वरूप उत्पन्न संतान निषाद।
- **प्रतिलोम विवाह** (शूद्र पिता ब्राह्मण माता) के फलस्वरूप उत्पन्न संतान **चाण्डाल** कहा जाता था।
- **भानुगुप्त के ऐरण अभिलेख**- समाज में **सती** प्रथा भी प्रचलित थी। सेनानी गोपराज की पत्नी उसके साथ चिता पर जल गई।
- स्मृतिकार **कात्यायन** के अनुसार स्त्री अपने स्त्रीधन के साथ अपनी अचल संपत्ति को भी बेच सकती थी।

- समाज में **वेश्यावृत्ति** का अस्तित्व था। वेश्याओं को **गणिका** कहा जाता था।

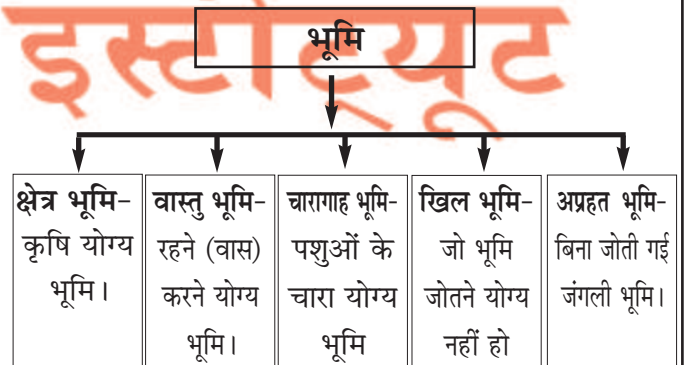
धार्मिक जीवन

- **राजकीय धर्म- वैष्णव धर्म**।
- **चन्द्रगुप्त-द्वितीय एवं समुद्रगुप्त** के सिक्कों पर **विष्णु के वाहन गरुण** का चित्र पाया जाता है, जो कि गुप्तवंश का **राजकीय चिन्ह** भी था।
- इस काल में **त्रिमूर्ति** अर्थात् **ब्रह्मा** (सृजन करने वाला), **विष्णु** (पालन करने वाला तथा **महेश** (संहार करने वाला) की पूजा प्रारंभ हुई।
- गुप्तकाल में **मूर्ति पूजा** ब्रह्मणीय धर्म का सामान्य लक्षण हो गई।
- **कुमार गुप्त** ने **नालंदा** में **बौद्धविहार** की स्थापना की।
- **गंगाधर अभिलेख** में **विष्णु** को **मदुसूदन** कहा गया है।
- गुप्तयुग में **मथुरा एवं वल्लभी** में **जैन सभाओं** का आयोजन हुआ था।

आर्थिक जीवन

स्रोत- मनुस्मृति (भोग कर) एवं हर्षचरित (भेंट कर) में

- आय का मुख्य स्रोत **भू-राजस्व** होता था।
- कर **1/4 से 1/6** भाग तक लिया जाता था।
- **भूमि** : इस काल में **पाँच प्रकार** की भूमि का उल्लेख मिलता है।



प्रमुख कर	
भाग	भूमि उपज का 1/6 भाग
भोग	दैनिक व स्तुओं के रूप में दिया जाने वाला कर
उद्वंग	स्थायी कृषकों पर लगाया जाने वाला भूमि कर
उपरिकर	अस्थायी कृषकों पर लगाया जाने वाला भूमि कर
भूतावात प्रत्याय	विदेशी वस्तुओं के आयात पर कर
शुल्क	सीमा, बिक्री वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर
हिरण्य	नकद कर
मेय	अन्न के रूप में दिया जाने वाला कर।

गुप्तकालीन आर्थिक शब्दावली

- विष्टि- निःशुल्क या बेगार श्रम
- दीनार- स्वर्ण मुद्राएँ
- अग्रहार- मंदिर व ब्राह्मणों को दान की जाने वाली भूमि
- व्यापारियों तथा शिल्पियों के चार संगठन थे- निगम, पुग, गण तथा श्रेणी।
- सिंचाई के लिए राहत या घटयंत्र का प्रयोग होता था।
- भूमि संबंधी विवादों को निपटाने वाले अधिकारी को न्यायाधिकरणी कहा जाता था।
- कालिदास ने सम्राट को 1/6 भाग कर लेने के कारण षष्ठमांश वृत्ति कहा।

बंदरगाह

- पूर्वी भारत- भृगुकच्छ (भड़ौच), सोपारा कल्याण।
- इस समय उज्जैन व्यापार का प्रमुख केन्द्र था।

गुप्त युग में वैज्ञानिक प्रगति

- आर्यभट्ट- प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। पुस्तक आर्यभट्टीय में उन्होंने पृथ्वी को गोल बताया व दशमलव प्रणाली का वर्णन किया तथा शून्य की खोज की।
- दशांगीतिक सूत्र एवं आर्याष्टक शतक आर्यभट्ट की अन्य रचनाएँ हैं।
- वराहमिहिर- पंच सिद्धान्तिका ज्योतिषि ग्रंथ की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त - प्रसिद्ध गणितज्ञ थे, उन्होंने ब्रह्मसिद्धान्त की रचना की थी।
- सुश्रुत- 'शल्य चिकित्सा का पितामह' कहा जाता है। प्रमुख कृति सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा का वर्णन।
- धनवन्तरि- 'भारतीय आयुर्वेद का पिता' कहा जाता है, चन्द्रगुप्त-द्वितीय के दरबार में रहने वाले चिकित्सक थे।
- भास्कर- तीन ग्रंथों की रचना की महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य और भाष्य
- लाटदेव- सूर्य सिद्धान्त गुरु कहा जाता था।
- वाग्भट ने अष्टांगसंग्रह नामक आयुर्वेद ग्रंथ की रचना की।

गुप्त कला

- कला के क्षेत्र में गुप्तकाल अपनी उत्कृष्टता की चरम सीमा पर पहुँच गया।
- इस काल के मंदिर वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इसमें शिखरयुक्त मंदिर (देवगढ़, झांसी) प्रमुख है।

अजन्ता की गुफाएं

अजन्ता की गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। कुल 29 गुफाओं में से गुफा संख्या 16, 17 और 19 गुप्त काल से संबंधित हैं।

- गुफा संख्या 16 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र है।
- गुफा संख्या 17 में जातक कथाओं का उल्लेख है। इसमें बुद्ध को यशोधरा से भिक्षा माँगते और यशोधरा द्वारा राहुल को बुद्ध को सौंपते हुए दिखाया गया है। इस गुफा में सिंहल के राजदरबार का भी चित्र है। इस चित्रों का चित्रशाला कहा गया है।
- अजन्ता की गुफाओं के चित्र बौद्ध धर्म के महायान शाखा से संबंधित हैं।

नोट: वर्ष 1983 में इसे यूनेस्को की विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया गया है।

बाघ की गुफाएँ

- मध्यप्रदेश के धार जिले में विन्ध्य पर्वत को काटकर, बाघिन नदी के किनारे बाघ की गुफाओं का निर्माण हुआ।
- खोज- डेन्जर फील्ड (1818)
- बाघ की गुफाएँ बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।
- इसकी तुलना अजन्ता-ऐलोरा की गुफाओं से की जाती है।

उदयगिरी की गुफाएं

विदिशा के निकट विष्णु के वराह अवतारकी विशाल मूर्ति प्राप्त। निर्माण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के सेनापति वीरसेन द्वारा।

प्रमुख मंदिर

मंदिर	स्थान
धम्मख स्तूप	सारनाथ (उत्तर प्रदेश)
शिव मंदिर	भूमरा (नागोद, मध्यप्रदेश)
दशावतार मंदिर	देवगढ़ (झांसी)
भितरगाँव मंदिर	कानपुर (उत्तर प्रदेश)
तिगवामंदिर	तिगवां, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
विष्णु मंदिर	उदयगिरि (विदिशा)
शिव मंदिर	अहिच्छत्र (बरेली), उत्तर प्रदेश
लक्ष्मण मंदिर (ईंटों से निर्मित)	सिरपुर
नचना-कुठार का पार्वती मंदिर	पन्ना (मध्यप्रदेश)
खोह का शिव मंदिर	खोह सतना (मध्यप्रदेश)
पिपरिया का विष्णु मंदिर	सतना (मध्यप्रदेश)

गुप्तकालीन साहित्य

- गुप्त काल संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग है।
- कालिदास को भारत का शेक्सपियर कहा जाता है जो चन्द्रगुप्त-द्वितीय के दरबार में थे, संस्कृत भाषा के सबसे प्रसिद्ध कवि हुए।
- याज्ञवल्क्य स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति और पाराशर स्मृति की रचना गुप्तकाल में हुई।
- वीरसेन उदयगिरीगुहा लेख का रचनाकार था।
- मंदसौर प्रशस्ति की रचना वत्सभट्टी ने की थी।

पुराण

- पुराणों के वर्तमान स्वरूप की रचना इसी काल में हुई।
- संख्या 18 है।
- मत्स्यपुराण- सर्वाधिक प्राचीन पुराण है।
- इसी काल में रामायण एवं महाभारत को अंतिम रूप दिया गया।
- प्रयागस्तम्भ लेख- हरिषेण द्वारा रचित समुद्रगुप्त से संबंधित।
- नागार्जुन बौद्ध दार्शनिक रसायन व धातु विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान थे।

षडदर्शन- (सांख्य, न्याय, योग, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत)

- भारत के प्रमुख छह षडदर्शन का अंतिम संकलन इसी काल में हुआ।

अन्यदर्शन-

1. चार्वाक/ लोकयात- भौतिकवादी दर्शन, संस्थापक- बृहस्पति, अलौकिक शक्ति में विश्वास नहीं।
2. आजीवक संप्रदाय- प्रवर्तक मकखलिपुत्र गोशाल थे।

साहित्यकार	साहित्य
कालीदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्रम्, कुमारसम्भव, मेघदूत, रघुवंश, विक्रमोर्वशीयम्।
भास	स्वप्नवासवदत्तम्, कर्णभारम्, चारुदत्तम्।
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
बाणभट्ट	हर्षचरित्र
विशाखादत्त	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
भूमक	रावणार्जुनीयम्
वत्स भट्ट	रावण वध
राजशेखर	काव्यमीमांसा
अमर सिंह	अमरकोश
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मसिद्धांत
सिद्धसेन	न्यायावतार
कामंदक	नीतिसार
अमंग	योगाचार

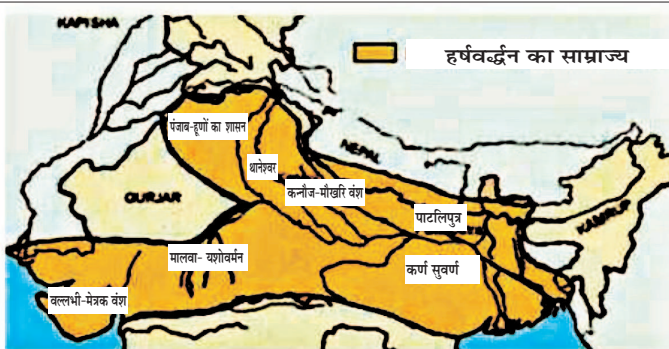
सहज शिक्षणम् .

इंस्टीट्यूट

□ नोट:

छठी शताब्दी के मध्य तक गुप्त साम्राज्य पूर्णतः विभक्त हो गया और उत्तर भारत फिर अनेक राज्यों में बँट गया। इनमें निम्नलिखित प्रमुख शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ।

1. वल्लभी में मेत्रक वंश
2. पंजाब में हूणों का शासन
3. कन्नौज में मौखरि वंश
4. मालवा में यशोवर्मन



वर्द्धन राजवंश (पुष्यभूति वंश)

पुष्यभूति

- इस वंश का संस्थापक था।
- **रजाधानी- थानेश्वर** (हरियाणा का अंबाला जिला) में इस वंश की स्थापना की।

प्रभाकरवर्द्धन

- यह वर्द्धन वंश की शक्ति और प्रतिष्ठा का संस्थापक था।
 - प्रभाकरवर्द्धन की पत्नी यशोमती से दो पुत्र राज्यवर्द्धन एवं हर्षवर्द्धन तथा एक कन्या-राज्यश्री उत्पन्न हुई।
- राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि नरेश ग्रहवर्मन से हुआ।

राज्यवर्द्धन

- इस के समय मालवा नरेश देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर राज्यश्री को कैद कर लिया।
- राज्यवर्द्धन ने देवगुप्त को पराजित कर दिया लेकिन देवगुप्त के मित्र गौड शासक शशांक ने धोखे से राज्यवर्द्धन की हत्या कर दी।

हर्षवर्द्धन (606-647)

- हर्षवर्द्धन, वर्द्धन वंश का शक्तिशाली व यशस्वी सम्राट था। मात्र 16 वर्ष की आयु में वह विकट परिस्थितियों में गद्दी

पर बैठा।

- वह अपने को **राजपुत्र** कहता था तथा स्वयं अपना नाम **शीलादित्य** रखा।
- हर्ष ने अपने आचार्य **दिवाकरमित्र** की सहायता से राज्यश्री को खोज निकाला।
- हर्ष ने **कन्नौज** को राजधानी बनाया
- हर्ष को पूर्वी भारत में गौड़ देश के **शैव राजा शशांक** से युद्ध किया 619 ई. में शशांक की मृत्यु हुई, तब वह शत्रुता समाप्त हुई।

ऐहोल प्रशस्ति : दक्षिण की ओर हर्ष के अभियान को नर्मदा के किनारे **चालुक्य वंश** के राजा **पुलकेशीन-द्वितीय** ने रोका और हर्ष को पराजित किया।

स्रोत : चीनी यात्री **ह्वेनसांग** की पुस्तक **सी-यू-की** से।

हर्ष के समकालीन शासक

भास्कर वर्मा- यह कामरूप का शासक था। भास्कर वर्मा, **वर्मन वंश** का शासक था।

- **पुलकेशियन-द्वितीय**- यह **चालुक्य वंश** का शासक था। उसकी राजधानी कर्नाटक के आधुनिक **बीजापुर** जिले के बादामी में थी।
- **गौड़ नरेश शशांक**- इसकी राजधानी **कर्ण सुवर्ण** थी। यह कट्टर **शैव** शासक था जिसने **बोधि-वृक्ष** कटवा दिया था।
- **ध्रुवसेन द्वितीय**- यह **वल्लभी** (गुजरात) का शासक था। इसे हर्ष ने पराजित किया, बाद में हर्ष ने अपनी पुत्री की शादी इससे कर दी थी।

ह्वेनसांग (629-645 ई.)

- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** **हर्षवर्द्धन** के शासन काल में भारत आया। वह **नालंदा महाविहार (बौद्ध विश्वविद्यालय)** में पढ़ने के लिए तथा बौद्धग्रंथ एकत्रित करने के उद्देश्य से भारत आया था।
- इसने **शूद्रों को कृषक** कहा था।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का **राजकुमार, नीति का पंडित एवं वर्तमान शाक्यमुनि** कहा गया है।
- हर्ष ने बौद्ध धर्म की **महायान शाखा** को अपना संरक्षण प्रदान किया।
- **कर** -हर्ष से तीन प्रकार के करों की जानकारी प्राप्त होती है

1. **हिरण्य-** नकद कर
2. **भाग-** कृषि उपज का 1/10 भाग
3. **बलि-** इसके बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

साहित्य

- हर्ष के दरबार में अनेक विद्वानों का निवास स्थान था। **बाणभट्ट, मयूर, मातंगदिवार।**
- **बाणभट्ट-हर्षचरित्र, कादम्बरी** की रचना की।
- **मयूर - सूर्यशतक।**
- **हर्ष ने स्वयं तीन नाटक प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानन्द** की रचना की।

महामोक्ष परिषद

- हर्षवर्धन **प्रयाग** में प्रत्येक **पाँचवें वर्ष** में **महामोक्ष परिषद** का आयोजन करवाता था। **हेनसांग** छठे परिषद में सम्मिलित हुआ।
- **कुंभ मेले** को प्रारंभ करने का श्रेय **हर्षवर्धन** को जाता है।

प्रशासन

- हर्षवर्धन को भारत का **अंतिम हिन्दू सम्राट** कहा गया है, उसका राज्य कश्मीर को छोड़कर उत्तर भारत तक सीमित था।
- साम्राज्य **सामंती संगठन** पर आधारित था।

प्रशासन

- राष्ट्र → प्रान्त/भुक्ति → विषय → ग्राम (छोटी इकाई)

महत्वपूर्ण शब्दावली

महाराजा/महासामन्त	हर्ष के अधीनस्थ शासक
महासामन्त	
सचिव/अमात्य	मंत्रिपरिषद् के मंत्री
भुक्ति	
उपरिक/राष्ट्रीय	भुक्ति का प्रशासक
ग्रामाक्षपटलिक	ग्राम शासन का प्रधान
चाट/भाट	पुलिसकर्मी
दण्डपाशिक/दाण्डिक	पुलिस विभाग का अधिकारी
वृहदेश्वर	अश्व सेना का अधिकारी
बलाधिकृत	पैदन सेना का अधिकारी

हर्षचरित के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी

- **सिंहनाद-** मुख्य सेनापति
- **अवंती:** शांति एवं युद्ध का मंत्री
- **स्कंदगुप्त:** हाथी (गज) सेना का मुख्य अधिकारी
- **कुंतल :** अश्वसेना का प्रधान अधिकारी
- **हेनसांग** ने हर्ष की सेना को **चतुरंगिणी** कहा।

नालंदा महाविहार

- हर्ष के समय **नालंदा महाविहार** जिसकी स्थापना **गुप्त शासक कुमारगुप्त-प्रथम** ने करवाई, **महायान बौद्ध** की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। हर्ष के समय यहाँ के **कुलपति** **आचार्य शीलभद्र** थे।

कन्नौज में शासन के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष

- आठवीं शताब्दी में तीन बड़ी शक्तियाँ **पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट** के मध्य **200 वर्षों** तक संघर्ष चला

त्रिपक्षीय संघर्ष

गुर्जर-प्रतिहार वंश

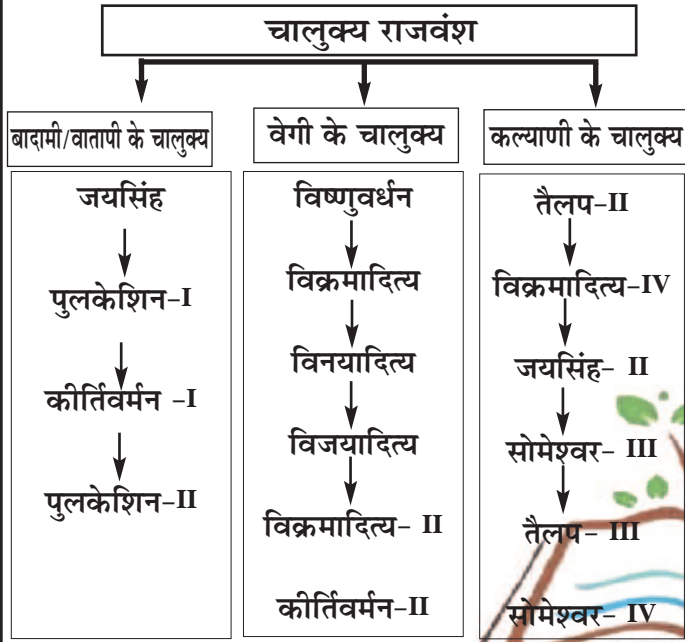
बंगाल का पाल वंश

कन्नौज के लिए

महाराष्ट्र के राष्ट्रकूट वंश

- अंतिम रूप से **गुर्जर प्रतिहार** शासकों का **कन्नौज** पर अधिकार हो गया।

□ नोट:



बादामी (वातापी) के चालुक्य

- **संस्थापक-** जयसिंह वातापी था। जयसिंह कदम्बों के अधीन शासक था।

पुलकेशिन प्रथम-

- बादामी के चालुक्यों का उत्कर्ष पुलकेशिन-प्रथम के समय में हुआ। उसने बीजापुर के निकट वातापी या बादामी को अपनी राजधानी बनाई थी।

कीर्तिवर्धन-प्रथम-

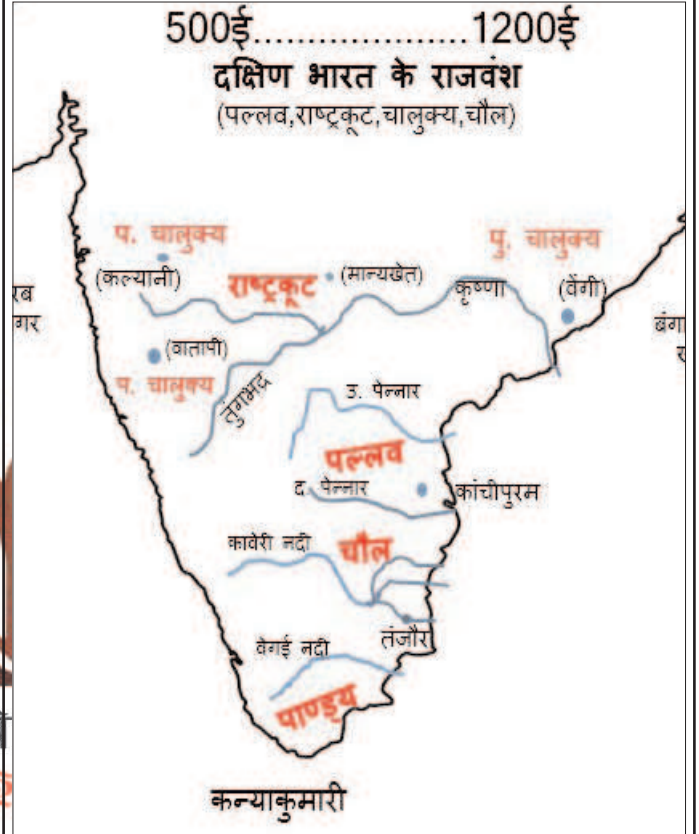
- इसने कदम्बों को नष्ट कर दिया और गोवा पर अधिकार किया। इसे वातापी का प्रथम निर्माता कहा जाता है।

पुलकेशिन-द्वितीय (609-642ई.)

- **जानकारी-** उसके ऐहोल प्रशस्ति लेख से जो दरबारी रविकीर्ति द्वारा रचित था। जिसकी भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी है।
- इसने हर्ष को पराजित किया।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग (641 ई.) पुलकेशिन-द्वितीय के राज्यभ्रमण के लिए आया था।

वेगी के चालुक्य

- पुलकेशियन-द्वितीय ने आन्ध्र को जीतकर अपने भाई विष्णुवर्धन को दिया,
- **संस्थापक-** विष्णुवर्धन इस वंश के अन्य महत्वपूर्ण



शासक थे- विजयादित्य, विशङ्गुवर्धन-चतुर्थ, विजयादित्य-द्वितीय, विजयादित्य-तृतीय, गुणम, भीम-द्वितीय।

कीर्तिवर्मन द्वितीय

- इस वंश का अंतिम शासक था जिसे राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने पराजित कर अपनी सत्ता स्थापित की।

कल्याणी के चालुक्य

- **संस्थापक-** तैलप-द्वितीय ने की थी। इसने राष्ट्रकूट राजा कर्क-तृतीय की हत्या कर इस वंश की स्थापना की।
- **राजधानी-** मान्यखेट।

सोमेश्वर-द्वितीय

- राजधानी मान्यखेट से कल्याणी ले गया।

विक्रमादित्य-चतुर्थ

- विक्रमादित्य चरित के लेखक विल्हण तथा मिताक्षरा के लेखक विज्ञानेश्वर को उसका प्रश्रय मिला हुआ था।

सोमेश्वर-तृतीय

के काल में चालुक्य राज्य बिखरने लगा। इसने

- इसमें अभिलाषीतर्पचिन्तामणि मानसोल्लास विश्वकोष की रचना की, जिसके कारण सर्वज्ञ भी कहा जाता है।

चालुक्यों का योगदान

चालुक्यों ने वास्तुकला के क्षेत्र में दक्कन या बेसर शैली (द्रविड़ शैली एवं नागरशैली का मिश्रण) का विकास हुआ।

- ऐहोल- मंदिरों का शहर कहा जाता है। यहाँ 70 मंदिरों के साक्ष्य मिले हैं जिसमें 4 दर्शनीय हैं- लाडखान मंदिर, हसीमल्लीगुडी मंदिर, दुर्गा मंदिर एवं मेगुती का जैन मंदिर

अन्य मंदिर

1. पापनाथ मंदिर
2. विरुपाक्ष मंदिर- इसे विक्रमादित्य-द्वितीय का रानी लोकमहादेवी ने बनवाया था।
3. त्रिलोकेश्वर महादेव मंदिर- इसे विक्रमादित्य-द्वितीय की दूसरी रानी त्रिलोक महादेवी ने बनवाया था।

पल्लव वंश

- इक्ष्वांकुओं को अपदस्थ कर उनकी जगह पर पल्लव आए।
- पल्लव का अर्थ-लता।
- राजधानी काँची (आधुनिक काँचीपुरम) में बनाई।

प्रमुख पल्लव शासक

- संस्थापक - सिंहविष्णु (565 से 600 ई.)
- पुरातात्विक स्रोतोंनुसार पल्लव वैष्णव थे।
- किरातार्जुनीयम तथा दशकुमारचरितम के लेखक भारवि, सिंहविष्णु के दरबार में रहते थे।

महेन्द्रवर्मन-प्रथम (600 से 630 ई.)

- उपाधि- चैत्यकरी
- इसके शासनकाल में पल्लव तथा चालुक्यों के बीच लंबा संघर्ष शुरू हुआ। पुलकेशियन-द्वितीय ने इसे पराजित किया।
- इसने मत्तविलास प्रहसन नाटक की रचना की।
- वास्तुकला के क्षेत्र में उसने मण्डपशैली (महेन्द्र शैली) का प्रारंभ किया।
- प्रारंभ में यह जैन मतानुयायी था किंतु नयनार संत अप्पार से प्रभावित होकर उसने शैव धर्म को अपनाया।

- इसने प्रसिद्ध संगीतज्ञ रुद्राचार्य से संगीत की दीक्षा ली।

नरसिंहवर्मन-प्रथम (630 से 668 ई.)

- इसने पुलकेशियन-द्वितीय की हत्या कर बादामी पर अधिकार कर लिया। अतः उसने वातापीकोण्डा (वातापी को जीतने वाला) व महामल्ल की उपाधि धारण की।
- उसने मामल्लपुरम नामक नगर बसाया।
- वैलूरपाल्यम् लेख के अनुसार इसने बादामी के चालुक्यों को पराजित कर विजय स्तम्भ स्थापित किया।
- ह्वेनसांग ने इसी के शासन काल में काँची की यात्रा की थी।

नरसिंहवर्मन-द्वितीय- (700 से 728 ई.)

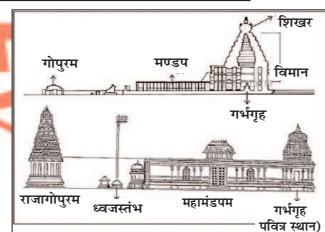
- यह वैष्णव धर्मानुयायी था।
- उपाधियाँ- राजसिंह, आगमप्रिय, शंकर भक्त।
- इसने राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग की पुत्री रेवा से शादी की।
- इसने काँची में कैलाश मंदिर, महाबलिपुरम में शोर मंदिर का निर्माण कराया।

अपराजित (882-897 ई.)

- यह पल्लवों का अंतिम महत्वपूर्ण शासक था।
- चोल शासक आदित्य चोल ने अपराजित पल्लव पर आक्रमण कर पल्लव राज्य पर आक्रमण कर लिया।

कला एवं वास्तुकला के क्षेत्र में पल्लवों का योगदान

- द्रविड़ शैली- पल्लवों के नेतृत्व में वास्तुकला की द्रविड़ शैली का विकास चार चरणों में हुआ।



1. महेन्द्रशैली/मण्डप शैली

- उदाहरण - शिलाकृति मक्कोंडा मंदिर एवं उन्डावल्ली का अनंतेश्वर मंदिर।

2. नरसिंह शैली /मामल्ल/महामल्ल शैली

- इसमें रथ या एकशिलाखंडीय (एकाशम मंदिर) है जो मामल्लपुरम में पाए जाते हैं।
- ये सप्त पैगोडा के नाम से जाने जाते हैं, किन्तु वास्तव में आठ हैं। धर्मराज, अर्जुन, भीम, सहदेव, द्रौपदी, गणेश, पिदारी एवं वालायान कुट्टीय।

3. राजसिंह शैली-

- इस शैली का प्रयोग नरसिंहवर्मन-द्वितीय ने किया।

- उदाहरण- महाबलीपुरम का तट, ईश्वर तथा मुकुंद मंदिर, काँची का कैलाशनाथ मंदिर एवं ऐरावतेश्वर मंदिर।

4. नंदिवर्मन शैली

- नंदिवर्मन-द्वितीय ने काँची के मुक्तेश्वर मंदिर, बैकुण्ठ पेरुमल मंदिर तथा मांगतेश्वर मंदिर, ओरगाडम (चिंगलपुट के निकट) का बडमालेश्वर मंदिर एवं गड्डिमल्लम (रेनिगुंटा के निकट) का परशुरामेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

संगम साहित्य

- संगम का अर्थ- तमिल कवियों का संघ, परिषद, अथवा गोष्ठी जिसे राजकीय संरक्षण प्राप्त होता था। इन्हीं कवियों द्वारा तमिल साहित्य रचा गया जो संगम साहित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- इसमें 990 वर्षों में लंबे अंतराल पर तीन संगम आयोजित हुए जिनमें 8598 कवियों ने भाग लिया। इसके प्रमुख संरक्षक 197 पांड्य राजा थे।

प्रमुख तमिल साहित्य

- संगम साहित्य में तमिल ग्रंथ (तोलकाप्पियन), एत्तुतोगई (आठ काव्य संग्रह), पाटुप्पत्तु (दस ग्राम काव्य पादिनेनकिलकनक्कु (18 लघु काव्य) और तीन महाकाव्य आते हैं।

संगमकालीन प्रमुख साहित्य

रचनाकार	संगम साहित्य
तोलकाप्पियर	तोलकाप्पियन (तमिल व्याकरण)
तिरुवल्लूवर	तिरुक्कुरल या कुरल
रुद्रसर्मन	अहनानूरु
नक्कीरर	मरुगर्प्पादय
सीतलैसत्रनार	मणिमेखलै (महाकाव्य)
इलंगोआदिगल	शिल्पप्पादिकारम् (महाकाव्य)
तिरुत्तक्कदेवर	जीवकचिंतामणि (महाकाव्य)

वेद

संगम सहज शिक्षणम् .

क्रम	स्थान	अध्यक्ष	प्रमुख प्रकाशित ग्रंथ
प्रथम संगम	मदुरा	अगस्त्य ऋषि	परिपाडल-मुदुनौर, अकत्तियन कलिरियाविरै आदि काव्य ग्रंथों का प्रकाशन
द्वितीय संगम	कपाटपुरम या अलवै	अगस्त्य ऋषि	अगत्तियम, कलि, व्यालमालै तथा कुरुक
तृतीय संगम	उत्तरी मदुरा	नक्कीरर (महाकवि)	नूत्रेम्बत्थ, वरि, परिपाडल, नन्निरै

□ नोट:

प्राचीन काल के प्रमुख राजवंश, संस्थापक एवं राजधानी

राजवंश	संस्थापक	राजधानी
हर्यक वंश	बिम्बिसार	राजगृह, पाटलीपुत्र
शिशुनाग वंश	शिशुनाग	पाटलिपुत्र, वैशाली
नंद वंश	महापद्मनंद	पाटलिपुत्र
मौर्य वंश	चंद्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र
शुंग वंश	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र
कण्व वंश	वासुदेव	पाटलिपुत्र
सातवाहन वंश	सिमुक	प्रतिष्ठान
कुषाण वंश	कुजुस कडफिस प्रथम	पुरुषपुर (पेशावर), मथुरा
गुप्त वंश	श्रीगुप्त	पाटलिपुत्र
पुष्यभूति वंश	पुष्यभूति	थानेश्वर, कन्नौज
पल्लव वंश	सिंह विष्णु	कांचीपुरम्
पाल वंश	गोपाल	मुंगेर
गुर्जर प्रतिहार वंश	हरिश्चन्द्र	कन्नौज
सेन वंश	सामंत सेन	राढ़
गहड़वाल वंश	चंद्रदेव	कन्नौज
चौहान वंश	वासुदेव	अजमेर
चंदेल वंश	नन्नुक	खजुराहो
गंग वंश	वज्रहस्त पंचम	पुरी
उत्पलवंश	अवंति वर्मन	कश्मीर
परमार वंश	उपेंद्र	धार, उज्जैन